श्री गणेशायनमः ।

* नवीन उपन्यास *

राजकुमार कलावती

प्रथम परिच्छेद ।

* दोहा *

श्रीगणपतिको सुमिरिके औ सुमिरूं जगपाल।
उपन्यास एक लिखतहूं करकृपाया [illegible] काल ॥

सुबहकी ललिमा चारों ओर फैली हुईहै रातकी ओस जोकि दरख्तोंके पत्तोंपर पड़ीहै वह सूर्य भगवानकी किरणें पड़नेसे मानिंद मोतीके मालूम होतीहैं सब आदमी अपने कारोबारकी फिक्रमें चले जारहेहैं ऐसे अवसर पर दो सवार हृष्ट पुष्ट खूबसूरत मय पांचों हथियारके एक जंगलकी तरफ चले जारहे हैं ।

प्यारे पाठको आइये इन आदमियोंकी बातों

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

को कान लगाकर सुनें और देखें कि यह क्या करतेहैं।

पहिला आ--क्यों भाई कल्यानसिंह!

कल्यान-- जी हजूर क्या फरमातेहैं!

पहिला आ० मैं यह कहताहूं कि वह बाग कि तुम्हारे बाप हमारे पितासे कहा करतेथे यहांसे कुछदूर बहुत उम्दा ऐक रमणीक बना हुआहै सो वह कहां है तुमको तो मालूम होगा।

कल्यान० हां साफ मुझको मालूमहै लेकिन यहांसे वह बहुत दूरपर है उसका नाम मोती बागहै?

प० आ० तो चलो आज वहांकी सैरकरें!

कल्यान० चलिये हजूर तावेदारको क्या उज्र है क्योंकि जैसे तुमारे पिताका दीवान मेरा बापहै उसी तरह आपका मैंभी खिदमतगारहूं?

इस तरह यह दोनों आदमी बातें करते हुये बागकी तरफ रवाना हुये चार घंटे तक बराबर चलेगये तब रास्तेमें पहुंचेतो क्या देखतेहैं

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

कि बहुत घने पेड़ोंका यह बाग बना हुआ है
कि जिसमें एक तरफ गुलाबकी टहनियाँ लग
रहीहैं तो दूसरी तरफ चमेलीके दरख्तों का त
ख्ता लगा हुआहै और चँपाके फूल अपनी
[illegible]लगही सुगँध उड़ाकर चित्त को प्रसन्न कर
रहेहैं भौंरे अपने अलगही कलीरका रसलेरहे
कलह्ल कर रहेहैं और तरह२ मेवाके दरख्त
लगरहेहैं कि जिनमें फल फूल लगे हुयेहैं उन
पर तोता मोर कोकिला इत्यादि अनेक प्रकार
के बैठेहुए चहचहा रहेहैं और अपनी मीठी
बोलियोंसे आदमियोंके चित्तको प्रसन्न कररहे
हैं बाग़ो बीचमें [illegible] लाब सँगमरमरका बहुत
खूबसूरत बनाहुआहै जिसमें फुवारे चलरहे हैं
और [illegible] रहीहै इसके तटपर दो संगमर
मरकी कुर्सियाँ पड़ी हुईहै जिन पर बहुत उम्दा
बेल बूँटे व पच्चेकारीका काम होरहाहै यहाँसे
कुछ दूर हटकर [illegible] बारहदरी बनी हुईहै जिस
में दो [illegible] गदोंके बिछेहुएहैं फ़र्श

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

पर एक उम्दा कालीन पड़ाहुआहै और झा
फानूस मोमबत्ती लगीहुई लटकरहीहैं यहदोनों
आदमी सैर करतेहुये तालावके पास आए औ
र हाथ मुँह धोकर कुर्सियों पर बैठकर पक्षियों
की आवाजसे खुश होनेलगे कुछदेरबाद राज
कुमार ने कहा कि कल्यानसिंह हमको भूँख
लगी है कुछ खानेको लाओ।

कल्यान० साहब अगर आप हुकमदें तो कुछ
मेवा जो कि यहां लगी हुई है तोडलाऊँ।

राजकुमार० अच्छा जाओ कुछ मेवाही ले
आओ क्योंकि थोडीसी खाकर पानी पीलेंगे
सो भूँक शांति हो जायगी।

कल्यान० बहुत अच्छा।

यहकह कल्यानसिंह उठकर चलादिया और
तरह२की मेवा दोनों आदमियोंने खाई तालाब
का पानी पिया फिर वहाँसे उठकर बारह दरी
की तरफ रवानाहुये वहाँ पहुँचकर दोनों आद
मी दोनों मसनदोंपर ... होगये

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

चारों तरफ अँधेरा छागया तब कल्यानसिंहने उन झाड फानूसोंमें जो मोम बत्तियाँ लगीहुई थीं जलाईं चारों तरफ रोशनी होगई तब राज कुमारने कहाकि आजकी रात यहीं काट कर सुबहको अपने मुल्कको चलेंगे कल्यानसिंहने कहा जो हजूरकी मर्जीहो सो कीजिये ऐसे ही तरह२की बातें करतेहुए सोगए और अचानक आधी रातके वक्त इस राजकुमार की आँखें खुलगईतो क्या देखताहै कि चांदनी खूबखुल रहीहै और किसीतरफसे रोनेकी आवाजचली आ रहीहै यह सुनकर मसनदसे उठखडाहुआ और घोडेपर सवार होकर जिधरसे यहआवाज आरहीथी उसीतरफको चलदिया कुछदूरचलकर यह क्या देखताहै कि एक आदमी तलवार लिये हुये एक औरतको जोकि बहुत खूबसूरत है और जिसकी उम्र करीब१६ वर्षकी मालूम होती है व सोनेके गहनोंसे लदीहुई है सामने खडी है उसको धमका रहाहै यह देखतही राज

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कुमार ने ललकारा कहाकि अरे दुष्ट ठहरजा
यह तू क्या करताहै इतना सुनकर वह आदमी
पीछे देखनेलगा और एक सवारको आतादेख
कर हरा चाहाकि भागजाऊं परन्तु वह जबतक
वहां आ पहुँचे और उस आदमीकी मुश्कें बां
धलीं फिर उस औरतके पास आकर कहाकि
तुमइस आदमीके हाथ क्योंकर फँसीं वह औ
रत इस वक्त घबरा रहीथी इस वजहसे बहुत
धीमी आवाजसे कहाकि आपनेमेरे ऊपर बड़ा
भारी अहसान किया जोइस आदमीसे बचा
या नहींतो जानें मेरा क्या दुर्दशा होती इसराज
कुमारने कहा अच्छा इस घोड़ेपर बैठचलो इस
वक्त अपनी बारहदरीमें ठहरें जब इस औरत
ने ऊँचा सिर किया और राजकुमारसे चार आं
खें हुईं तो एक दूसरे पर मोहित होगया और
और उस आदमी को व औरतको घोड़ेपर बि
ठाकर यह राजकुमार अपने बागमें आये तबउस
चोरको एक बुर्जमें जोकि एक मकानके कोने

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

प बनाथा बंदकर दिया और आप दोनों आ हमी घूमतेहुये तालाव पर आकर कुर्सियों पर बैठगये और इस तरह बातें होने लगी ।

राजकुमार० प्यारी आपका नाम क्याहै ।

औरत० बहुत मीठी आवाज से मेरा नाम कलावती है !

राजकुमार० तुम इस आदमीके हाथ क्योंपडी

औरत० प्यारे इसवक्त हाल कहनेका मौका नहींहै औरमैं यहां आपके साथ बैठीहूं लेकिन प्यारी कृष्णाका क्या हाल होगा इतना कहते २ कलावती की आखोंमें पानी भरआया और वह रोने लगी तबइस राजकुमारने उसका कोमल हाथ पकडकर कहा ।

राजकुमार० प्यारी आप रोतीहैं मेरी जान निकलतीहै इसलिये इसरोनेको बंदकरिये और सबब रोनेका बतलाइये ।

कलावती० हे प्राणनाथ मेरी कृष्णाको भी यह बदमाश ले आयेहैं लेकिन खबर नहीं है

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कि वह बिचारी अब कहां होगी और किस हालतमें होगी ?

राजकुमार॰ अच्छा मैं अभी जाकर उसकी भी खबर लाताहूं ।

कलावती॰ तो प्यारे आप भी तो अपना नाम बता दीजिये ।

राज॰ मेरा नाम राज कुमारहै ।

राजकुमार इतना कह उठकर बारहदरी की तरफ रवानाहुए और वहां पहुँचकर अचेत कल्यान सिंहको जगाया वह उठकर बैठा हुआ और कहने लगा हजूर क्या हुक्महै ।

राजकुमार॰ चलो मेरे साथ आओ ।

कल्यानसिंह उनके साथ होलिया यह दोनों आदमी फिर उसी तालावपर आये तब राजकुमारने कहा कि देखो कल्यान सिंह तुम यहां खबरदाररहना मैं एक जरूरी कामको जाताहूं यह कहकर राजकुमार घोडे पर सवार होकर कल्यानसिंहको कलावतीके पास छोडकर दल

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

दिये कुछदूर जाकर यह क्या देखतेहैं कि एक आदमी इधर उधर देख रहाहै और वह कुछ गुनगुनाताहै यह एक पेडकी आडमें छिपकर खडे होगये कुछदेर बाद वह आदमी यह कहताहुआ कि अब "मेराभी काम,, किसी तरफ रवाना हुआ उसके पीछे होलिये थोडीदूर चलकर उस आदमीने एक गठरीको जो वहांपडी हुईथी खोला और अपने पाससे कुछ उसके ऊपर छिडका इतनेमें वह औरत जो गंटरीमें बँधी हुईथी खडी होगई तब उससे यहआदमी कहने कहनेलगा कि यातो तू मेरा कहनाकर नहींतो मारताहूं यह सुनकर वह औरत घबराई और कहनेलगी कि हे परमेश्वर अनाथोंके नाथदीनदयाल परोपकारी इसवक्त तुम्हीं मेरे सहायक हो इस दुष्टसे मेरा जल्दी पीछा छुडाओ नहींतो मैं विना मौतके मारी जाऊंगा वह सुनतेही राजकुमार उसकी तरफ दौडे और कहा ठहरजा दुष्ट तुझको मैं अभी मारताहूं यहसुन

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

तेही वह आदमी डरा परन्तु तलवार लेकर इनको मारनेको दौड़ा राजकुमारने दूरसेही उस के बदनमें भालेको मारा इसके लगतेही वहगि रपड़ा तब राजकुमार घोड़ेसे उतरकर उसऔरत के पास आये और कहा चलिये परन्तु आप का नाम क्याहै उसने कहा मेरा नाम कृष्णाहै यह सुनतेही कलावतीकी सहेली समझकर बहु त खुशहुये और उस आदमीको जो अभी जि दाथा मुश्कें बांधकर कृष्णाको साथलेकर उसी बागकी तरफ रवानाहुए वहां पहुंचकर इसआ दमीको उस बुर्जमें लेगये लेकिन वहांपर क्या देखतेहैं कि पहिला कैदी गायब होगयाहै तब फिर घबड़ाये हुए इस आदमीको वहीं छोड़कर तालाबकी तरफ रवानाहुए परन्तु वहां जाकर देखातो न तो वह कल्यानसिंह है न कलावती यह देखकर इनका सिर चक्कर खानेलगा औ र हाय कलावती कहतेहुए पछाड़खाकर गिर पड़े और बेहोश होगये यह देखकर कृष्णा ब-

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

हुतघबराई और तालाबोंसे पानीलाकरउनके मुँहपर छिड़का और कपड़ेसे हवा करने लगी कुछ देरबाद उनको होशआयातो आंखेंखुली व अपनेको जमीनपर पड़ा देखकर बैठे हो गये और कृष्णासे कहा।

राजकुमार०यहतो बड़े ताज्जुबकी बातहै कि मैं अभी यहांपर कल्यानसिंह जोकि मेरा सरदारहै कलावती जो तुम्हारी सहेली है इन दोनों को छोड़गयाथा उनका पता नहीं है।

कृष्णा०खैर साहब जहांतक हो सकेगा हम उनका पता लगायेंगे परन्तु आप भी अपने नाम धामसे मुझको आगाह कीजिये।

राज०मेरा नाम राजकुमारहै औरमैं हरपालगढ़के राजा विजयसिंहका लड़काहूं औरयहां सेरके वास्ते आयाथा कि मैंने यहाँ तमाशा देखा परन्तु अब मेरा जीना बिना कलावती के हरगिज न होगा लेकिन आपभी मुझको बताइये तुमकौनहो और इस आफतमें क्यों

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कर फँसी ।

कृष्णा०मैं कलावतीकी सहेलीहूं और कलावती शाहपुरके राजा विनयसिंह की लड़कीहै जो बहुत खूबसूरत मानिंद चांदके है उसकी अभी शादी कहीं नहीं हुई है लेकिन दो चार जगह सगाई की खबर भेजीथी मैं और वह एकदिन रातके वक्त अपनी चित्रसारीमें सो रहीथी यकायक आधी रात के वक्त छतपर धमाधमकी आवाज आई मानो कोई आदमी कूद रहाहै हम दोनों जागपड़ी तो मैंने कहा प्यारी यहकौनहै उसने कहा देखना चाहिये तो कमरेके दरवाजेको खोलकर जो मैंने देखाके ४ आदमी खड़ेहैं दर्वाजा खुलतेही वहआदमी मेरी तरफ दौड़े मैं कुछ कहने भी न पाईथीकि एकने मेरे ऊपर काला कपड़ासा जो उसके हाथमें था डालदिया कपड़ा गिरतेहीं मुझको एक छींक आई और बेहोश होकर गिर पड़ी फिर मुझे नहीं मालूम बिचारी कलावती का

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

उन्होंने क्या किया जबमैं होशमें आईतो अपने को उसी जंगलमें जहांसे आप लायेहो पाया।

राजकुमार॰ तो अब उनका पता लगाना चाहिये।

कृष्णा॰ जीहां हजूर जहां तक होसकेगामैं उनका पताशीघ्र लगाऊँगी यह कहकर कृष्णा राजकुमार से पन्द्रह दिनका वायदाकर किसी तरफको रवानाहुई और राजकुमार उस केदा को घोड़ेपर लादकर हरपालगढ़की तरफ रवाना हुए वहांपर पहुँचकर अपने नजर बागमें चोर दरवाजे होकर गये और इसको हवालात में बंद करके जो उसी बागमें बनीथी उसी चोरदरवाजेसे निकलकर शहरमेंसे कुछ जरूरी चीजें लेकर किसी तरफको रवाने हुए।

द्वितीय परिच्छेद

शामका वक्तहै सब पक्षी दिनभरका दाना खा पीकर अपने घोंसलों की तरफ आते हैं

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

बादलकी लाली अलग हो शोभा देरही है सूर्य भगवान अस्त हुआ चाहते हैं एक सुनसान जंगलमें जोकि हर किस्मके घनेपेड़ोंसे शोभित है एक योगीजी किसी धुनमें चले जारहे हैं ।

पाठको । कृपा करके इनका भी काम देखिये कि यह क्या करतेहैं चलते यह योगीजी एक एक नदीके किनारे पहुँचे और यहां ठहरकर किसीकी राह देखनेलगे थोड़ी देरबाद इनको एक नाव अपनीतरफ आती नजर आई। जब वह नजदीक आई तो यह क्या देखतेहैं कि ८-१० आदमी कुदाल व खंजर लियेहुये बैठे हैं जब उन्होंने इन योगी महाराज को देखा तो कहा कि किनारे पर नावको लेचलो यह हुक्म पाकर वहनाव तटपर लाईगई और मुखियाने योगीजीसे दंडवतकी और कहा कि आप यहां सुनसान जंगलमें क्योंकर बैठे हो योगीने कहा कि हमतोरमते हुए साधूहैं किसी [illegible] करते चलने इस

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

र आ निकले हैं लेकिन यहां पर नदी देखकर हम ठहर गये हैं कि कदाचित कोई नाव मिल जाय तो अपने सफर को तै करें यकायक परमेश्वर ने यह तुम्हारी नाव मेरे लिये भेजी है ।

मुखि०तो चलिये महाराज इस नाव को अपने चरण रखकर पवित्र कीजिये ।

योगी०चलो मैंभी यही चाहताहूं ।

यह कहकर योगी समेत सब आदमी नाव में बैठगये और नावको खेनेलगे रास्तेमें मुखिया ने योगी महाराजसे कहा ।

मुखि०क्योंजी महाराज आपका जन्मस्थान कहां है और कुछ पढेभीहो !

योगी० काशीपुरी में है और कुछ ज्योतिष विद्या इत्यादि भी जानतेहैं ।

मुखि०महाराज एक हमारा सिपाही जिसको कि एक गठरी देकर हमने अपने महलों को भेजदियाथा लेकिन अबतक नहीं पहुँचासो बतलाइये कि वहउस गठरीको लेकर कहां गया

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

और कहां है ।

योगीजीने आसमानकी तरफ देखकर अंगुलियोंमें कुछ गिनकर कहाकि वह सिपाही गठरीको लेकर [शायद उसमें औरत हो] चला आ रहाथा यकायक एक सवारने उसको दबाया और उस गठरीको छीनकर उसको कैद किया है सो वह कहीं न कहीं कैदमें होगा !

मुखि० योगीजी महाराजको ऊपरसे नीचेतक देखकर कहने लगाकि आपका कहना सच है

योगी० मैंनेतो रमल ज्योतिषसे जानाहै सच व झूठकी परमेश्वर जाने ।

मुखि० आपतो मुझको कोई पहुँचे हुए मालूम पडतेहैं चलिये दो एकदिन हमारे ही मकानपर कृपा कीजिये !

इसी कदर बातें करतेरइनको दो घंटे होगये चाँदनी निकलआई और चलतेर एक जँगलके किनारे जा पहुँचे जो बडा रमणीक बनाहुआ था तरहर के पेड मेवा लगी हुईथी वहाँ पहुँच

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कर मुखियाने नावको किनारेपर लानेको कहा नाव किनारेपर लगादीगई और सबआदमी उतरे।

मुखि० चलो महाराज यहजंगल आपकाही है यहां ठहरिये।

योगीजीने यहबात मंजूरकी और यह उनके साथ होलिये नावको किनारेपर बांध दियाथा थोड़ी देरमें एक रास्ता मिला उस रास्ते होकर यह सब आदमी करीब२आधकोस चलकरइन को एक बहुत बड़ा दर्वाजा मिला जहांपर दस आदमीमय संगीनके पहरा देरहेथे इनको देख कर उन आदमियोंने इनको आदाब बजाया यह सब आदमी उस दर्वाजेके भीतर घुसगये वहां पहुँचकर योगीजी क्या देखतेहैं कि एक छोटासा बाग लगाहुआ है जिसमें दोनहरें बहरहीहैं और उनके किनारे तीनसड़कें पत्थर की बनी हुईहैं फुहारे चलरहेहैं एक ओर चंपा

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

चमेली मोतिया दोनों मरुआ गुलाब गेंदा इ त्यादि खुशबूदार पेड़लगेहैं दूसरीतरफ सबतरह की मेवा लगीहै बीचमें एक बहुत बडा चबूतरा है जिसपर एक बारहदरी बनीहै और वहांसे आगे चलकर एक बहुत बडाऊँचा मकानबना हुआहै जिसमें बहुतसे कमरेहैं यह सब आदमी घूमते हुए उस बारहदरी में आये योगीजी को वहीं पर ठहराया और सब आदमी मकान की तरफ चलेगये उनका सरदार योगीके पास रह गया और योगीसे कहा।

मु० महाराज आपके खानेको मँगाऊँ।

योगी० जो तुम्हारी इच्छाहै तो थोडासा मँगा लीजिये।

यह सुनकर मुखियाने एक सीटी बजाई जिसकी अवाज सुनकर दो आदमी भागे आये और कहा क्या हुकमहै सरदारने उनसे कहा कि आपके वास्ते बहुतउम्दा खानालाओ यह हुक्म पाकर वह दोनों आदमी उस मकान से

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

गये थोडीदेरबाद वहांसे एकथालमेंखाना और एकसुराही पानीकी लेकर निकले औरबारह दरामें पहुँचकर कहा लीजिये हजूर हाजिरहै अब क्या आज्ञाहै सरदारने कहाकि अब जाओ और नाचका सामान जल्द तैयार करो इधर योगीजीने हाथ धोकर खाना खाया और उस सरदारनेभी खाया करीब एकघंटेबाद उस बारहदरीमें मखमलीगद्दे बिछादियेगये ऊपरसे से चारोंतरफ तरह२के इतरछिडके रोशनी बहुत तेज करदीगई कुछ अरसेबाद दो आदमी एक डोलेको लाये जिसमें एक औरत बहुत खूबसूरत बैठीथी लेकिन वह इसवक्त किसीके रँज में जानपडतीथी उसकोभी एकतकियेके सहारे बिठादिया उसके पासही वह सुखिया बैठगया सामने योगीजी बैठेथे इतनेमें वह औरत जो देखनेमें मानिंद परीके खूबसूरत थी नाचने के लिये आई और नाचशुरू होगया शराबें उडने लगी सबने खूबशराब पीई लेकिन योगी और

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

उस औरतने जो रण्डियोंमेंथी शराब नहीं पी थी दो घंटे नाच खूबहुआ। आधीरात होगईथी। इस लिये नाचको बंदकिया और सोनेके लिये उस बड़े मकानमें सबआदमी चलेगये और अपने २ कमरोंमें सोये योगीजीको भी एक कमरा अलहिदा दिया गया। सब आदमी सोगये चारों तरफ सन्नाटा होगया।

योगीजीको सोयेहुये अभी १॥ घंटा हुआथा कि उनके कमरेके किवाड कोई आदमी खड़खड़ाने लगा। योगीजी नींदसे चौंक पड़े और चारपाईसे उठकर किवाड़ोंके पास आकरकहा कौनहै बाहर वालेने कहा कि महाराज आप किवाड खोलिये मैं हुसियारीहूँ जो आपकी सेवा में आईहूँ इन्होंने किवाड खोलदियेतो क्या देखतेहैं कि वही औरत जोकि उदासथी परंतु बहुत खूबसूरतथी और जिसने शराबभी नहीं पी थी सामने खड़ी है इसके बाद यह दोनों आदमी कमरेके भीतरगये और योगीजी पलँ

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

गपर बैठगये वह स्त्री जमीनके फर्शपर बैठगई तब योगीने कहा !

यो० कहो आपका आना इस वक्त क्योंहुआ

स्त्री०हाथ जोडकर महाराजमैं दुखोंकी मारी हूँ सो आपसे कुछ कहनेके लिये इसवक्तसब को गाफिल नशेमें देखकर आईहूँ।

यो० क्या मुसीबतें तुमारे ऊपर पडीहैं ।

स्त्री० [धीमी आवाजसे]हे कृपानाथ मैंशाह पुरके राजाविजय सिंहकी लडकीहूँ और कला वती मेरा नामहै जिनकेयहां आप ठहरे हुए हैं यह लुटेरेहैं येही मुझको और मेरी सखीको महलोंमेंसे चुरा लायेहैं परन्तु मेरी सखीकाकुछ पतानहींहै इसलिये हेमहाराज आप इधर जा निकलेंतो मेरी खबर करदेना क्योंकि आपलो ग बडे दयावान और परदुख को टारने वाले होतेहैं ।

यो० [उसके मूँहकी तरफ मोरफरके]अच्छा ईश्वर करेगा तो मैं तुमको दो दिनमें इनके

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

फँदेसे निकालदूँगा परन्तु मैं जिसवक्त चलने को कहूं तैयार रहना ॥

स्त्री॰ बहुत अच्छा हजूरकीमैं दासीहूं इन ह त्यारोंसे जल्दी मेरा पीछा छुटाओ नहींतो मेरा सतीधर्म नाश होजायगा क्यों कि मैंने एक म हीने बाद इसके साथ विवाह करनेका कौल किया है ।

यो॰ जहांतक होगा मैं कलही इस कार्यको करूंगा अब इस वक्त आप जाइये क्योंकि सवेरा हुआ चाहताहै ।

कलावती ॥ जो आज्ञा मैं जातीहूं ।

यह कहकर वह औरत चलीगई योगीजीने किवाड बंदकर लिये और पलँगपर पडे हुए सोच विचार करते हुए सोगये सवेरा हुआदो आदमी योगीजीके कमरेपर आये और किवा ड खोलकर कहाकि चलो महाराज अपनेशौच स्नान आदिसे निवृत होजिये योगीने कहा नहीं अबहम आगेको सफरकरेंगे रास्तेमें सब

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

काम करलेंगे यह जवाब सुनकर वह आदमी उस सरदारके पास आये और कहाकि हजूर वहतो आज जाना चाहते हैं यह सुनतेही सरदार योगीके पास आया और हाथ जोडकर कहाकि आज और यहां कृपा कीजिये ।

यो॰ आजमैं नहीं रहसक्ता जो तुम्हें कुछ कामहो कहो ।

मु॰ [हाथ जोडकर] हे योगीराज मेरी औरत मुझसे प्रेमनहीं करती औरन मुँहसेअच्छी तरह बोलती है हमेशा उदास रहती है सोइस का कुछ उपाय बताइये ।

यो॰ (थोडी देर सोचकर) मैंने समझ लिया तुम उसको अभी थोडेही दिनसे लायेहो इस वजहसे वह कम बोलती है और उदास रहने का एक गुप्त कारणहै ।

मु॰ तो महाराज इसका कुछ उपायभी है ।

यो॰ यहांसे थोडी दूरपर एक टीला है उस टीले पर एक बहुत बड़ागुम्मट बनाहैवह हमारा

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

पुराना स्थानहै वहांपर तावीज मौजूदहै जो तू उस औरतको साथलेकर वहांपर चलैगातो मैं जंत्र मंत्र इत्यादि तावीज इसके गलेमें बांधदूं गा सोही उदासी जाती रहैगी ।

मु० आप खानातो खा लीजिये ।

यो० मैं यहां खाना नहीं खासक्तां अबजाता हूं आज्ञा दीजिये ।

मु० तो हमभी आपके साथचलैं उस काम को कर देंगे ।

यो०हाँ बेशक चलो तुमारा सब काम होजायगा।

यहसुनकर मुखिया चलागया और चार आदमियों को तय्यार होनेके लिये कहा फिर उस औरतकेवास्ते पीनस तयार करनेको कहाऔर औरतके पास जाकर कहा हेमृगनैनी अबतो मुखसे बोलो उदासी छोडदो परन्तु उसने कुछ जवाब नहीं दिया आखिर उससे योगीजी का सबहाल कहाकि तैयार होजाओ इतनेंहीमें पीनस आगई और तुरँतही पीनसपर सवारहोगई

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

मुखियाने योगीसे कहा चलिये महाराज अब तैयारहैं यह सुनकर योगी वहांसे चले उसके साथ मुखिया होलिया पीछे पीनस और इस के पीछे चार आदमी सँगीन लियेहुये चलेजा रहेहैं करीब तीन घंटे चलनेके बहंटीला दिखाई दिया और सब आदमी उसपर चढगये पीनस रखदीगई तब योगीने कहा ।

यो० आप सब आदमी यहीं रहिये और इस औरतको मेरे साथ कर दीजिये ताकि मैं इस का उपाय करूँ ।

मु० जो आपकी आज्ञा ।

यह कहकर उस औरतको योगीके साथ किया सो वह उस गुम्मटमें लेगये किवाड बंदकर लिये फिर मुखियाने गुम्मटके चारों ओर उन आदमियों को कर दियां आप दरवाजे पर खडा रहा ।

खडे २ इनको तीनघँटे होगये लेकिन किवाड नहींखुले तब मुखियाने भीतरको आवाजफेंकी

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कि योगीजी किवाड खोलो बहुत देरहोगई पर न्तु भीतरसे कुछ जवाबनहीं आया तबतो यह बहुत घबराया और दो तीनबार खूब जोरसे आवाजेंदी लेकिन कुछभी जबाव नहीं आया आखिरको इसनेअपने आदमियोंको बुलाया और कहा जल्द इन किवाडों को तोड डालो यह हुक्म पातेही इनज्वानोंने अपनी तलवारें निकाललीं और उन किवाडो को तोड डाला जब उसके भीतर गये तो वहांपर क्या देखतेहैं बहुत अँधेरा होरहाहै परन्तु उस योगी और उस औरतका नामोनिशानें नहीं है यह देख कर बहुत घबराये रोशनी भी की परन्तु कुछ नतीजा न निकला और आपस में कहनेलगे कि इसके भीतरही भीतरसे कहां गायब होगये इसमेंतो कहीं दूसरा दरवाजाभी नजर नहीं आता आखिरको हारकर उसके बाहर निकले चारों तरफ खोजकी लेकिन कुछ न हुआ तब फिर ढूँढने के लिये किसी तरफको रवानाहुए।

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

तृतीय परिच्छेद

आज हरपालगढ़की अजीब दशा होगई है जोकि मानिंद इन्द्रपुरीके गुलजार बसा हुआ था आज उसमें चारों तरफ शोक छाया हुआ है बाजार सब बंद होगयेहैं किसीने घरमें चूल्हा नहीं जलायाहै और बहुतसे आदमी इधरउधर जंगलों की तरफ किसी की तलाशमें जारहे हैं और सबने काले वस्त्र धारण करलियेहैं।

प्यारे पाठको इसका यही सबबहै कि राजकुमार को गायब हुए आज तीन दिन होगयेहैं लेकिन अभीतक लौटकर नहीं आयहै और उनके पिता व भाई इत्यादि रो रहेहैं एकदिन गोविंदसिंह राजकुमारके छोटे भाई अपने पिताके साथ उसी नजर बागमें कुर्सियों पर बैठे हुएहैं और राजकुमार के ढूँढनेकी तदबीर सोचरहेहैं यकायक इनके कानमें किसीके कराहने व हाय २ करनेकी आवाज आई चौंक कर खड़े होगये

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

और पितासे कहा कि यह किसकी आवाज आती है जोकि इस बागमें हीसे मालूम होती है चलो देखेंतो सही कि यह कौन हाय कर रहाहै ।

इतना कहकर यहदोनों उस आवाजकी तरफ रवाना हुए जबउस बुर्जके पास पहुँचेतो क्या देखतेहैं कि एक आदमी उस कोठरी में पड़ा हुआ चिल्ला रहाहै और उसके बदनसे लोहू निकलरहाहै इन्होंने कोठरीका दर्वाजा खोला और उससे कहाकि तू कौनहै तुझे यहां कौन इस हालतमें कैद करगयाहै ।

आद०हजूर इसवक्त मुझे बोलनेकी ताकत नहीं है क्योंकि एकतो यह जख्म बहुत गहरा है दूसरे भूक बहुत जोरसे लगी है अगर मेरे हालपर रहम खाओगेतोमैं आपके साथ नमक हरामी कभी नहीं करूंगा इसालिये कुछ खाने पीनेको दो ।

गोविंदसिंह बागमेंसे कुछमेवा तोड़कर लेगये

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

और उसके पास जाकर देदी उस कैदीने वह
खाली जब खापी चुका तब बोला कि मैं एक
डाकुओंके दलका सिपाहीहूं जिसका सरदार
एक जंगलमें जो यहांसे करीब२०मीलपरहोगा
एक बगीचेमें रहताहै और हमेशा चारों तरफ
लूटमार किया करताहै अकसर राजाओं की
लड़कियों को भी लेजाताहै एकदिन उससरदा
रने हम आठ आदमियोंको लेकर शाहपुर में
हमला किया और राजा बिनयसिंहकी लड़की
व एक सहेलीको लेकर जोकि बहुत खूबसूरत
थी लेकर चले२ जब जंगलमें आयेतो वह सर
दार पांच आदमियोंको लेकर किसी तरफको
रवाना हुआ और तीन आदमियोंसे कहा कि
इन दोनों गठरियों को हमारे मकान को लेजा
ओ एक गठरी मेरे सिरपरभी थी जिसमें उस
राजकुमारीकी सहेलीथी दूसरी उसराजकुमारी
की दूसरे सिपाहीके पासथी और उसीके साथ
वह तीसरा सिपाहीथा कुछ दूर चलकर मैं थक

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

गया उसगठरीको सिरसे उतारकर जमीनपर रखदिया यहदोनों आदमी आगे चलकर एक पेडके नीचे ठहरगये मैं अपनी गठरीके पाससो गया लेकिन थोडी देरकेबाद किसीके रोनेकी आवाज आई मैं चौंककर बैठा होगया और उन सिपाहियोंकी तरफ गया लेकिन वहांपर किसी को नहीं पाया तो अपने दिलमें यह सोचा कि इन डाकूओंका साथ छोडकर इसऔरतकोलेकर किसी शहरमेंजाकर गुजरानकरेतो अच्छा और यहांसे लौटअपनी गठरीकोखोलकर औरतको निकाला औरउसके ऊपर दवा छिडककर होस में किया जबवह औरत होश में आई तो मुझको देखकर डरनेलगी इतनेही में एक आवाज आई कि ठहरजादुष्ट यहक्या कर रहाहै मैंने पीछे मुँह करके देखा तो एक सवारको अपनी तरफ आता हुआ देखातो मैं तलवार लेकर सवारकी तरफ[जिसकी सूरत हमारीसी है] रने दौड़ा लेकिन उसने दूर

सेंधी पे रे ऐसा भाला मारा कि पार होगया मैं वहीं पर गिर पडा और बेहोश होगया जब होशमें आया तो इस कैदमें अपने को बँद पायाहै यह हाल सुनकर गोबिंदसिंह ने कहा अच्छा अब यह बताओ कि तुम किस का साथ दोगे ॥

कैदी० मैंने अबआपका नमक खायाहै सो आपका साथ दूंगा ॥

गोबिंदसिंह०तोमैं अब जाता हूं एक जर्राह को भेजताहूँ ॥

यह कहकर अपने पिताके साथ गोबिंदसिंह वहांसे चलदिये और एक जर्राहको बुलवाकर उस कैदीके पास भेजदिया उसने आठरोजमें जख्मों को आराम करदिया तब गोबिंदसिंहने एकदिन अपने पितासे कहाकि अगर आप आज्ञादेंतो पांच सवारोंको लेकर भाइ राजकुमारकी तलाशमें जाऊं बिजयसिंहने उदास हो कर कहा जाओ लेकिन जल्दी लौट आना ।

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

यह आज्ञा पाकर गोविंदसिंह उस कैदीको और पांच ज्वान साथ लेकर शहरके बाहरहुए जंगलकी तरफरवानाहुए चलते२ऐसे जंगलमें पहुँचगये जोकि चारों तरफ हरियालीसे भरा हुआथा और बीचमें एक तालाब बनाथा रात होगईथी यहसब आदमी उस तालाबकी तरफ चले थोडीही दूरगये होंगे कि उस तालाबमेंसे आग निकलने लगी यह देखकर एक पेडके नीचे खडे होगये और तमाशादेखनेलगे इतने हीमें दो आदमी मशाल लियेहुए उस तालाब मेंसे जोकि बालूका था पानी नहींथा निकले और उस दर्वाजे कोमिट्टीसे ज्योंका त्यों बंद करके किसी तरफको रवाना हुए जब नजरों से गायब होगये तब गोविंदसिंहने कहा इस जमीनके अंदर क्याहै देखना चाहिये यहकह कर वहांसे चले और उसीजगह आकर जमी नको खुदवाया तो दर्वाजा निकलआया नीचे उतरने को सीढियां नजर आई यह देखकर

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

गोविंद सिंह उस कैदी और एक जवान को साथ लेकर नीचे उतरे बाकी चार सवारोंको अपनी हिफाजतके लिये ऊपर दर्वाजेपर छोड़ा

जब यह तीनों आदमी नीचे उतरेतो उसके भीतर बड़ा अँधेरा पाया मोमबत्ती जलाईतो एक आदमीकी राह नजर आई करीब एक मीलके उसके भीतर चलेगये फिर दर्वाजा नजर आया। उस कैदीने दर्वाजेको खोला उसके भीतर एक बाग नजर आया उसमें सूर्यकी रोश नीभी फैली हुईथी तरह २ के दरख्त लगेहुए थे फूलोंकी सुगंध उड़रहीथी घूमतेहुए यह तीनों आदमी एक तरफको निकल गये वहां क्या देखतेहैं कि एक चटानपर कल्यानसिंह हथक ड़ी पहने हुए बैठे रोरहेहैं पहिलेतो कल्यान सिंह इनको अपनी तरफ आता देखकर डरा लेकिन जबवह पास पहुँचगये तब राजकुमारके भाई को पहचान लिया और खुशीसे उठकरके

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

हुए और उनसे जाकर मिले गोविंदसिंह इस हालतमें कल्यानसिंहको पाकर बड़े हैरान हुए और आँखोंमें पानी भरलाये और कहा।

गोविन्द० क्यों भाई तुम यहां क्योंकर लाये गयेहो और भाई राजकुमारकीभी कुछ खबरहै कि वह कहां है।

कल्यान० मैंनहीं जानताकि राजकुमार कहां है क्योंकि मैं और वे मोती बागकी सैर करने को गयेथे वहांपर रातहो जानेसे ठहरगये जब मैं नींदमें खूब सोरहाथा कि राजकुमारने मुझे जगाया और उस तालाबपर लाकर मुझसे कहा कि तुमइस औरतको जोकि बहुतखूबसूरत थी गहना खूब पहिने हुईथी होशियारी करना मैं एक जरूरी कामके लिये जाताहूं लौटकर आताहूं यह कहकर वहतो चलेगये मैं कुरसीपर बैठगया थोड़ीसी देरमें किसीने पीछे से आकर एक काला कपड़ा मेरे ऊपर डाल दिया उस कपड़ेसे ऐसी महकआई किमें बेहो

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

श होगया जब होशमें आयातो अपनेको इसी जगह कैदमें पायाहै मेरे पास दिनमें एक दफे दो आदमी आतेहैं और मेरा हाल पूछतेहैं मेरे न बतानेसे मारलेकी धमकी दिखाकर चले जाते हैं।

गोबिन्द॰ अबचलो बाहरनिकलो महाराज कुमारको खोजना चाहिये और तलवार निकालकर उनकी हथकडी काट डालीं। फिर वहां से रवाना हुए और उसी दर्वाजेसे निकलकर बाहर हुए तब गोबिन्दसिंहने कहाकयों कल्या न सिंह हमारे साथचलोगे या अलहिदा रहोगे

कल्यान॰मैंतो उनको अकेलाही ढूंढूंगा आप चाहे जिधर जाइये यह सुनकर गोबिंदसिंह अपने साथियोंको लेकर किसी तरफको रवाने हुए और कल्यानसिंह एक पेडके नीचे सोगये दो घंटे बाद यह सोकर जगे तो क्या देखतेहैं कि एक हीरेकी जडी अँगूठी पडीहुई है उन्हों ने उसको उठाकर देखातो मालूमहुआ कि अंगू

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

ठी तो राजकुमारकी है लेकिन दिलमें यह खयालथा कि वह यहाँ क्यों आये सो उनकी अँगूठी यहाँ पडीहै इसीतरह बहुतसे तर्कवितर्क करके चाहाकि उठकर चलें इतनेहीमें क्यादेखते हैं कि एक सवार घोडा भगाये हुए चला आ रहाहै जोकि मानिंद राजकुमार के मालूम होताहै यह उस पेडकी आडमें खडे होकर देखने लगे वह सवार इनकी बगलमें होकर घोडाफेंके हुए चलागया जब दूर निकलगया तो पेडकी आडसे निकलकर राजकुमार व उस औरतकी तलाशमें किसी तरफको रवाना हुए !

चतुर्थ परिच्छेद ।

दोपहर का वक्त है धूप बडी तेज पडरही है किसी आदमी या जानवर का निकलना नहीं चाहता कि बाहर जाए गरमीके मारे प्यास बडी २ बाद लग आती है पक्षीगण अपने घोंसलों में धूपसे मुँह छिपाए बैठे हैं ऐसे समयमें एक

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

सवार जंगलमें धूपकी कुछफिक्र नकरके किसी धुनमें चला जा रहाहै ।

पाठकगण यह सवार वही राजकुमार जो अपनी प्यारी कलावतीकी खोजमें चले जारहेहैं लेकिन गरमी बहुत पडरहीथी इस वजहसेइनको प्यास बहुत जोरकी लगी लाचार होकर पानीकी फिक्रमें इधर उधर देखनेलगेतो सामने कुछदूरपर बहुतसे पेडोंका झुंड नजरआया यह उसीतरफको रवानाहुए थोडीदेर बादवहां पहुँचे तो क्या देखतेहैं कि एक बहुत बडा तालाब बनाहुआहै जिसमें सुनहरी मछलियाँतैर रहीहैं उसके चारों तरफ आम अनार अमरूद और नाशपाती वगैरह के दरख्त लगे हुएहैं जिनपर पक्षी बैठे हुए चहचहारहेहैं और उन पेडोंकेनीचे चौतरफा सडकें सँगमरमरकी बनी हुई हैं पक्का घाट बनाहै इन्होंने जाकर दो चार फल तोडकर खाये तालाबमेंसे पानीपिया और एक पेडके नीचे जीन बिछा कर सोगये

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

शाम होगई लेकिन इनकी नींद नहीं टूटी यह तालाब एक जमींदारकी लड़कीने अपनी सैर करनेके वास्ते बनवायाथा जोकि हररोज शाम के वक्त अपनी सहेलियोंके साथ टहलने को आया करतीथी आजभी मामूलके माफिक सैर करनेको आई और आपसमें हँसी दिल्लगी ठठोली बाजी होनेलगी।

पहिली स० (जमींदारकी लड़कीसे) आप देखती हैं कि यहाँ पक्षी कैसी किल्लोल कररहे हैं अगर तुमभी अपना ब्याह करलेती तो काहेको यह आग तुमको जलाती!

दूसरी स० बहिनजी वाह तुमने खूबकहा अबतकतो यह अपने पिताके अधिकारमेंथी जब वह ब्याह करते तब होता लेकिन अब उनके मरने पर यह मुख्तियार होगई सो इनकी मर्जी है चाहे जिस शाहको पसँद करें।

ज० लड़की. चलो हटो निगोड़ियों तुमको यही बातें आया करतीहैं मैंतो जानतीनहीं किके

सा ब्याह और कैसा शौहर होताहै जो तुम मुझको ज्यादा छेडाकरोगी तोमैं तुम्हारे साथ यहां नहीं आया करुंगी।

तीसरी सहेलीकी बात सुनकर सबउसतरफ को देखनेलगी और उसी तरफको रवाना हुई जब उसके निकट पहुँचीं तो कोईतो कहने लगी देखो कैसा खूबसूरत शाहजादाहै कोईकहने लगी यह मुसाफिर धूपका माराहै लेकिन तोभी इसका चहरा दमकरहाहै जबइस लडकी की निगाह उसपर पडीतो जीजानसे आशक होगई और पैर लडखडाने लगे थोडी देरमें जमीन पर गिरपडी और बेहोश होगई जब सहेलियोंने इसकोगिरतेहुए देखातो घबडाई और तालाबमेंसे किसीने पानी लाकर उसके ऊपर छिडका किसीने उसको हवाकी थोडीदेरबाद जब इसको होश आयातो अपनेको जमीनपर पडा पाया झट शरमिंदा होकर खडी होगई इतने हीमें एक सहेलीने कहा!

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

प०स०क्यों कमलावती यह क्या हाल होग या अभीतो कहतीथी कि मैं नहीं जानतीकि श्रोहर किसे कहतेहैं अबएक मुसाफिरको देख तेही पहिचानगई सचहै कामसे यह अपनी बा त खतमभी न करनेपाई किं राजकुमारकी नींद उचटगई और बैठे होगये सामने कमलावती को देखातो कलावतीसे भी हुस्नमें कुछ चढके मालूम हुई क्योंकि इसकी किशोर अवस्था थी इनको अपने सँभालनेकीताब नरही और गश खाकर फिर लोट गये जब कमलावती ने यह हाल देखातो कपडा भिगोकर अपने हाथसे उनके मुँहकी हवा करनेलगी आधघंटेबाद इनको होश आया आंखें खोलदी और एक आह इनके मुँहसे निकलीकि हाय कलावती कहागई कमलावती इस आहको सुनकर अप ने दिलमें बहुत पछिताई कि यहतो किसी के इश्कमें फँसाहुआहै मैंने नाहक इससे मुहब्बत की लेकिन दिलको थामकर कहाकि हुजूरका

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कहांसे आना हुआ और किस फिक्रमें इधर आ निकलेहो और आप कौनहो ।

राज॰ मैं एक मुसीबतका मारा मुसाफिर हूं और अपनी माशूकाकी फिक्रमें इधरआ निकलाहूं गर्मी तेजीसे पडरहीथी इसवजहसे यहां ठहरगयाहूं अब चलनेका इरादाहै ।

कमला॰ अगर आप मेरे ऊपर रहम लायें तो दो चार दिन यहीं ठहरिये जिसमें कि आपकी मैं सेवाकर सकूं क्योंकि यह तन व धन जो कुछ मेरे अधिकारमें है सब आपका हो चुका आपकी मेरे ऊपरबडी महरबानी होगी जो मुझको कबूल करोगे किसीके दिल को दुखाकर निराशकर जाना अच्छा नहीं है अब इस दुनियांमें सिवाय तुमारे मेरा कोई नहीं । जब राजकुमारने उसकी ऐसीमीठीरबातेंसुनी तो दिल खुश होगया और थोडी देरकेलिये कलावतीकी भी याद भूलगये और उस लडकी से कहा ।

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

राज० अच्छा आपकी ऐसीही मर्जी है तो मुझे मँजूरहै आप अपने दिलको न दुखाइये लेकिन यहतो बताइये कि आपका नाम क्याहै

कमला० [शर्माकर सिर नीचे करके] कमलावती

राज० तुम इस जगह कौनहो और किसकी लड़कीहो !

कमला० मैं इस ग्रामके जिमींदारकी लड़की हूं लेकिन अब वह इस दुनियामें नहीं रहा ।

इतना कहकर कमलावतीकी आँखोंमें पानीभर आया और कंठरुक गया सो वह बोल न सकी यह देखकर राजकुमारने कहा फेर समझगये तुम किसी बातकी फिक्र मतकरो मैं यहींपर ठहरा हुवाहूँ आप अपने मकानको जाइये कमलावतीने कहा ।

कमला० अगर आपका कुछ नुकसान न हो तो मेरे मकानको अपने चरण रखकर पाक कीजिये ।

राज० नहीं मुझको यहां रहनेसे दोनों कार्य

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

हासिल हो सकतेहै क्योंकि एकतो तुमारा अतिथ रहूँगा दूसरे कलावतीकी खबर भी मिल सकती है ईश्वर चाहेतो ॥

कमला॰ हजूर आप क्यों तकलीफ उठातेहैं मैं अपने अहलकारोंको भेजकर कलावतीको ढुँढवा सकताहूँ ।

राज॰ मुझको मकानों का रहना पसँद नहीं इसलिये माफ कीजिये आखिरको राजकुमार ने एकभी नहीं सुनी और वहाँपर रहे मगर कमलावती राजकुमार की बातें के सिवाय एक सहेली के जोकि कमलीकी तरफदारथी किसी ने न सुना क्योंकि सब सहेलियां उन सुनहरी मछलियों व फुवारोंके देखनेमें तल्लीन होरही थीं तबकमलावतीने उन सबसे कहाकि चलो घरकी राहलें ।

एक सखी॰ ऐ क्या उस मुसाफिर से आप नाराजहैं !

कमला॰तुम चुपरहो ज्यादा चोचलापन मुझे

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

अच्छा नहीं लगता जो मुझे भोली भाली लड़कीको अभीसे नर्कमें ढकेलतीहो ।

जब इसकदरकी बातें कमलावती को सुनी तो फिर कोई नहीं बोली क्योंकि आखिर तो जिमींदारकी लड़कीथी और खूब उसके साथ चलदी आध घँटेमें अपने२ मकानपर पहुँची लेकिन कमलावती को चैननहीं था अपने दिलमें कहतीथी हेपरमेश्वर जो तूने मेरा जोड़ा मिलायाहै तो इस राजकुमार का दिल फेरदे और जल्दीसे रात करदे कि मैं फिर अपने प्यारेसे मिलूँ और एक थालमें तरह२के भोजन सजाने लगी ॥

जब रातके १२ बजे तो कमलावती चाहती थीकि थाल लेकर राजकुमार के पास जाऐं कि इतने ही में चारों तरफ से शोर गुल की आवाज व अपनी छतपर किरके कूदने की धमाधम सुनाई दी थोड़ी देरमें १५-२० आदमी तलवार बन्दूक लिय हुए देखपड़े उन्होंने

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

जो कुछ उस मकानमें माल व मताथा लेलिया फिर रोती हुई कमलावती को लेकर चल दिये जब इस मकान के पडोस वालों ने यह हाल देखा तो झट अपने २ मकानों से हथियार ले कर उन के पीछे दौडे और खूब बन्दूकों की फैर दोनों ओरसे हुई लेकिन वह घोडों पर सवार थे इस वजह से ग्राम वाले कुछ न कर सके लाचार होकर वापिस लौट आये।

पाठकगण जिस वक्त बन्दूकों की आवाज राजकुमार के घोडे की कानमें गई तो चौकन्ना होकर अपने मालिक को हींस कर जगाने लगा घोडे का हींसना सुन कर राजकुमार उठ कर बैठे हुए तो क्या देखते हैं कि २०–२५ सवार भगे जा रहे हैं और पीछे को बन्दूक छोड रहे हैं लेकिन उनमें से किसी औरत के रोने की आवाज आ रही है यह हाल देख कर इनको उसी कलावती की याद आगई और गुस्सेमें आकर झट घोडेपर सवार होगये

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

और उन डाकुओं से जो अभी इनसे करीबर खेत के फासिले पर होंगे कहाकि ठहरो हराम जादों इस औरतको कहां लिये जातेहो इतना कहकर घोड़े को उन की तरफ दौड़ाया और १०-१२ सवारों को घायल कर दिया इतनेही में किसी ने पीछेसे आकर पीठमें एसी तलवार मारी कि यह चक्कर खाकर जमीन पर गिरपड़े यह देख एक सवार भी कूद पड़ा और उस [राजकुमार] की मुश्कें बांधकर किसी तरफ को रवाना हुए ॥

पञ्चम परिच्छेद

पाठक गण भूले नहीं होंगे कि एक योगी जी उस डाकू के यहां से कलावती को लेकर गुम्मट मेंही गायब होगये अब यहां पर हम उन्हीं का बयान करते हैं कि जब योगी जी कलावती को लेकर गुम्मठ के भीतर गये तो बाहर के किवाड़ों को बंद कर दिया और

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

जमीन में से एक पत्थर के चौके को उखाडा उसमें नींचे उतरने को सीढियां थीं यह दोनों नींचे उतरे योगी ने उस पत्थर को फिर उस दर्वाजे पर जैसा का तैसा ढकलिया और मोम बत्ती जलाकर नींचे को उतरे करीबर २५० सीढियों के उतरने के बाद मानिन्द गली के नजर आई यह बराबर उसमें चलेगये १ कोस चलने के बाद मैदान दिखाई दिया जब रोसनी में पहुंचे तो उस योगीने एक चश्मे के किनारे बैठकर अपने झोले में से अँगूठी निकाल कर कलावती को दिखाई जिसको देखतेही वह योगी को गौर से देखने लगा और कहा कि कृष्णा !

योगी॰ हां

कला॰ तूने यह क्या शकल बनाई है।

कृष्णा॰ मैंनेतुम्हारेहा लिये योग धारन कियाहै।

कला॰ तूभी मेरेसाथही इन हत्यारों केहाथ फँसी थीं फिर कैसे छुटकारा पाया।

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कृष्णा० मुझ को एक राज कुमार ने एक जंगल में से इन दुष्टों के हाथसे छुडाया है वह यह भी कहते थे कि इसी जंगल में से कलावती को भी मैंने छुडाया था और एक बाग में जो करीब ही था अपने सिपाही की रखवाली में छोड गयाथा लेकिन तुमको जब वहां पर नहीं देखा तो गश खाकर गिर पडे जैसे तैसे मैं उनको होशमें लाई और १५ दिन में तुमारे मिला देनेका वाइदा करके आई हूं इसलिये उसी बागको चलना चाहिये क्योंकि वायदा आ पहुँचा है ।

कला० चलो मैं भी यही चाहती हूं ।

यह बात चीत करके दोनों वहां से चलदीं दो घंटे चलने के बाद कलावती ने कहा कि कृष्णा मैंतो थक गई मुझ से अब नहीं चला जाता जरा कहीं ठहर जाओ देखो तो मारे धूपके कैसी सख्त गर्मी पड रही है ।

कृष्णा० (योगीही रूपमें) जो आपकी मर्जी

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

ठहरने की है तो ठहर जाओ मुझे कुछ इंकार नहीं।

कला० मुझे तो भूख लग रही है अगर तेरे पास कुछ खाने को हो तो दे।

कृष्णा० मेरे पास तो इस वक्त कुछ नहीं है अगर आप का हुक्म होय तो इधर उधर बन में से फल तोड लाऊँ आप जब तक इस दरख्त के नीचे बैठें।

इतना कह कर कृष्णा वहां से चली और कलावती को वहीं पेड के नीचे बैठा छोडा थोडी देर बाद कलावती क्या देखती है कि सामने एक शेर भागा चला आरहा है यह उसको देखते ही डरी और भागी लेकिन पांव तो थक गये थे इस वजह से थोडी दूर चल कर यह गिर पडी और बे होश होगई इतने ही में शेर आगया चाहता था कि इसको खाये कि किसी ने पीछे से आकर उसके एक भाला मारा तो शेर चक्कर खाकर गिरपडा और मरगया।

पाठको जब शेर मरगया तो एक सवार

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

घोडे परसे उतरा और कलावती को घोडे पर रखकर किसी तरफको रवानाहुआ यह सवार वही राजकुमारहै जो कल्यानसिंह के पासहो कर घोडा भगाये हुए निकलगया था लेकिन वह नहीं पहचान सकेथे।

आध घंटे बाद वह योगीजी (कृष्णा) बहुत से फलफूल लेकर वहां आये लेकिन जबकलवतीको वहां नहीं देखा तो बहुत घबडाये और चारों तरफ देखने लगा बहुतसी आवाजेंदी कि कलावती प्यारी कलातू कहां है बडी मुशिकलसे मैंने तुझे पाया लेकिन फिरभीतू गायब होगई अब तुझको कहां ढूंडूं किधरजाऊं इतना कहकर रोतेहुए मोतीबागकी तरफरवाना हुए क्योंकि वाइदा खतमहो चुकाथा इस वजहसे दिनरात बराबर चलेगये तीसरे दिन यह मोती बागमें पहुँचगये और तालाबपर होते हुए बारहदरी को गये लेकिन वहांपर राजकुमारको नहीं पाया बजाय उनके एकलिफा

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

का पड़ा हुआ पाया इनने उस लिफाफेको उ
ठा लिया और घबड़ाकर राजकुमारको चारों
तरफ बागके बाहर भीतर ढूंढने लगा लेकिन
उनका कहींभी पता नहीं चला लाचार होकर
फिर बारहदरीमें आन पहुँचा ।

शाम होगईथी इस वजहसे आजयह कृष्णा
[योगी] उसीजगह ठहरगई और अपने योगी
भेषके कपड़े उतार दिये फिर तालाबपर आ
कर मुँह धोया और असली सूरतमें आकर
कुर्सीपर बैठगई और लिफाफेको निकाला तो
खोलकर पढने लगी उसमें यह लिखाथा ।

प्यारी कृष्णा

तुम मुझसे१५ दिनमें लौट आनेका वाइदा
करगईथी आपका वाइदा खतमहोगया लेकिन
आप यहां न पहुँची लाचार होकर अपनी
प्यारी कलावतीकी खोजमें जाताहूं और यह
पत्र इसलिये लिखे जाताहूं कि अगर तुमयहां
आजाओ तो घबड़ाना नहीं तसल्ली रखना

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

फक।

आपका राजकुमार

पत्रको पढकर कृष्णाको कुछ तसल्ली हुई और वहांसे उठकर शैर करतीहुई बारहदरीमें गई वहां जाकर मोमबत्तीको जोकि झाडफानूसोंमें थी जलाया और सोच विचार करतीहुई एक मसनदपर लेटरही।

अभी कृष्णाको नींद नहीं आईथी कि किसी की पांवोंकी आहट इसके कानोंमें पडी सुनते ही यह बैठी होकर चारों तरफ देखनेलगी तो सामने तालावपर एक आदमी खडा हुआ नजर आया पहिलेतो यह डरी लेकिन फिर हिम्मत बाँधकर बैठीही रही थोडी देरबाद वह आदमी धीरे२ कुछ देखता भालता हुआ बारहदरीकी तरफ गया वहाँ पहुँचकर जबकृष्णाको देखातो जीजानसे आशक होगया और कृष्णा भी इसको देखतेही चाहनेलगी फिरवह आदमी दूसरी मसनदपर जा बैठा और इन दोनोंमें बात चीत शुरू हुई।

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

आदमी॰ आप यहाँ किस फिक्रमें बैठी हुई हैं।

कृष्णा॰ [नीचा सिर करके] मैं कुँवर राजकुमार की इन्तिज़ारमें बैठी हूं।

आदमी॰ ऐ राजकुमारी! तुम राजकुमार को कैसे जानती हो।

कृ॰ पहिले तुम अपना पता दो कि तुम कौन हो

आदमी॰ मैं राजकुमारका सरदार हूँ और कल्यानसिंह मेरा नामहै अब उन्हीकी तलाश में इधर आयाहूँ।

कृष्णा॰ (उस पत्रको निकालकर) को देखो यह पत्र यहां पड़ाहै कल्यानसिंहने उस पत्रको पढ़ा और कहा कि कृष्णा कौनहै कलावती कौनहै।

कृष्णा॰ कृष्णातो मैंही हूं और कलावती मेरी मालिक का नामहै जो कि राजा शाहपुर की लड़की है।

क॰ राजकुमारसे तुम्हारी मुलाकात कैसे हुई

कृष्णा॰ इसी जँगलमें राजकुमारने मुझे डाकु

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

ओंके हाथसे छुड़ायाथा कहीं मुझसे पहिले कलावतीको बचाकर इस बागमें छोड़गयेथे लेकिन जबमैं यहाँ आईतो....

कल्यान०[बात काटकर]हाँ तो उसी औरत का नाम कलावतीहै जिसे राजकुमार मेरेपास छोड़गयेथे वहतो बहुत खूबसूरतहै लेकिन थोड़ी देर बाद १०-१२ आदमी मुझको व कलावतीको बेहोश करके लेगयेथे ।

कृष्णा०हाँ मैंने उन डाकुओंके हाथसे कलावती को निकालाथा लेकिन एक जँगलमें न जाने फिरकौन उसेलेगया क्योंकि मैंतो खाने के लिये फलफूल तोड़ने चलीगईथी ।

कल्यान०देखो यह अँगूठी राजकुमारकी मुझे फलाने जँगलमें मिली है परन्तु अफसोसहै कि उनसे यह कैसे गिरी ।

कृष्णाने अँगूठी लेकर देखा और कहा कि यह अँगूठी जरूर उनकी बेहोशीसे गिरी होगी लेकिन अबतो रातबहुत होगईहै कल फिर उन

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

की खोजमें निकलूंगी अब आप आराम कीजे। जब कल्यानसिंह सोगयेतो कृष्णाभी अपनी मसनदपर सोगई सबेरा होतेही उनसे पहिले जगी और कल्यानसिंहको जगाया दोनों वहां से राजकुमार व कलावतीकी तलाशमें किसी तरफ को रवाने हुए।

षष्ठम परिच्छेद

जब गोविंदसिंह अपने साथियों को लेकर और कल्यानसिंहको छोडकर किसी तरफको चलेतो एक मैदानमें पहुंचे वहां एक पक्का कूआ बनाहुआथा उसपर एक बुड्ढा बैठाहुआथा उस बुड्ढेने कहाकि ऐमुसाफिर कुछ परमेश्वरके नामपर मुझकोदे क्योंकि मुझे इस वक्त भूख बहुत जोरसे लगी है ईश्वर तुमारी मुराद पूरी करेगा। यह सुनकर गोविन्दसिंहने एक अशर्फी व थोडीसीमेवा अपनी खुर्जीमेंसे इसकोदीउस बुड्ढेने खुशी२ लेली और खानेलगा बाद खाने

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

के उस बुड्ढेने कहाकि हजूर कहाँ को जारहेहैं आज इस जगह पर ठहरिये ।

गोविंद० हम अपने भाईकी तलाशमें जारहे हैं अगर तैने कोई सवार इधरसे जाता देखा हो तो बता ।

बुड्ढा० अभी यहाँ होकर करीब१० सवारके गयेहैं और उनके पासदो गठरभी थे नहीं मालूम उनमें क्या था ।

गोविंद० वह किधरको गयेहैं और कितनी दूर पहुँचे होंगे

बुड्ढा० [हाथसे बताकर]इधरको गयेहैं और करीब ५ मीलके फासिले पर पहुँचे होंगे !

इतना सुनकर गोविंदसिंह ने अपने मनमें कहाकि अगर इनही लोगोंसे लड़ाईका काम पडगया तो हम ७ आदमियोंसे क्याहो सकेगा इसालिये हरपालसिंहसे कुछ आदमी और बुला लेना चाहिये यह सोचकर एक सवार से जिसकानाम मोहनसिंहथा कहाकि तुमजाओ

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

और पितासे कहकर पचास सवार लेआओ लेकिन बहुत जल्द आना हम इसी रास्ते से आगे जातेहैं मोहनसिंह अच्छा कहकर रुख सत हुआ।

फिर गोविन्दसिंहने अपने घोडे उसी तरफ को तेजीसे दौडाये बाद एकघंटे चलनेके एक नदी किनारे पहुँचे वहाँ जाकर यह क्या देखतेहैं कि दूसरे किनारेपर दो तँबू तनेहुएहैं और उनके बाहर बहुतसे घोडे बँधे हुए हिनहिना रहेहैं और दो आदमी सँगीन लिये हुये एक तँबू की होशियारी कररहेहैं दूसरेतँबूमेंसे धुआं निकल रहाहै यह देखकर गोविंदसिंहने कहा

गोविंदसिंह० [कैदीसे] यह सामने किसके तँबू लगेहुए हैं।

कैदी० यह डेरे तो उन्हीं डाकुओंके मालूम होतेहैं जिनमें मैंभीथा क्योंकि यह दोनों आदमी जो टहल रहेहैं मैं पहिचानताहूँ

गोविंद० यह बताओ कि आदमी पार कैसे

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

पहुँचे यहांतो कोई नावभी नहीं है।

कैदी० नांवतो यहांपर हरवक्त रहतीहै लेकिन इन्हींके कामके वास्ते कहींपर गई होगी

गोविंद०तो अब क्या करना चाहिये जिससे कि उस पार पहुँचे और देखें कि इन डेरोंमें क्याहै।

कैदी०मैंने एकतदबीर सोचीहै कि आपसब आदमी यहां ठहरिये मैं तैरकर पार जाताहूं और वहांसे खबर लेकर वापिस आताहूं तब तक मोहनसिंहभी आजायँगे।

गोविंद०अच्छा तुमजाओ हम यहीं ठहरेहैं।

यह सुनकर वह कैदी कपड़े उतारकर नदी में कूदपड़ा और थोड़ी देरमें उसपार जालगा। वहां जाकर उनदोनों आदमियोंसे मिला पहिले तो यह मौचक रहगये लेकिन इसको पहिचानकर कहाकि इतने दिनोंमें तुम कहांपर गायबथे और वह औरत कहां है इसने कहा कि बदनमें और तुम उस जंगलमेंथे तोमैं सो

गया और किसीने आकर मुझे दबाया व मेरी मुश्कें बांधकर और उस औरतको लेकर चलागया मुझे कैदखानेमें बंद किया अब मैं उनको बातोंमें फुसलाकर लायाहूं कि तुमको वह औरत दिलवादूंगा देखो नदीपार बहरहे हुएहैं अब इनसे जरूर बदला लेना चाहिये यह सुनकर एक आदमी डेरेमें गया और अपने सर्दार से जाकर कहा कि गुलाबसिंह आगया है।

सरदार० कहां है।

आ० दूसरे तंबूपरहै।

सरदारने बाहर निकलकर गुलाबसिंह को दिखा और उसके पास जाकर सब हाल पूछा उसने वही किस्सा जो पहिले इनसे कहचुका था सरदारसे भी कहदिया।

सरदार० चलो खाना खालें तब उसपार चलें तबतक नावभी आजायगी।

गुलाब० नाव कहां भेजी है।

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

सरदार० एक गठरी को जिसमें कोई शाह जारहाहै अपने मकानको भेजी है चलो खाना तैयारहै।

गुलाब०मुझे भूख नहीं लगी है तुम खाओ और इन दोनों सिपाहियोंको लेते जाओ क्योंकि यहभी खावेंगे मैंयहां होशियारीप: हूं

सरदार०उन दोनोंको लेकर दूसरे तंबूमें गया और सबके साथ खाना खाने लगा इधर गुलाबसिंहने उस तंबूका पर्दाउठाकर देखातो एक बहुत खूबसूरत औरत को पाया लेकिन वह औरत रोरहीहै यह देखकर परदातो छोड़ दिया और नदीकी तरफ मुँह करलिया इतने ही में नावभी आगई।

गुलाबसिंह नावको देखते ही उस पर गया और उस आदमीसे जो नावपर बैठाथा कहा कि नाव उसपार लेचल उसने मनाकिया और कहाकि बिना हुक्म मालिकके मैं न जाऊंगा यह सुनकर गुलाबसिंहने गुस्सेमें आकर एक

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

तलवार ऐसी मारी कि सिरछुदा होगया और नावको उसपार लेगया वहां पहुँचकर गोविंद सिंहसे सबहाल कहा इन्होंने कहाकि अबउस पार चलना चाहिये ।

इतनेमें मोहनसिंहभी ४० सवार लेकर आ पहुँचे तब गोविन्द सिंहने कहा तुमतो बहुत जल्द आगये ।

मोहन० मुझे यह सब रास्तेही में आते हुए सिलगये इनको आपके पिताने आपकी हो शियारी को भेजाहै क्योंकि उनका दिल नहीं माना होगा सबब कि आपतो५ सवार लेकर ही आयेथे और इन लोगोंसे [illegible] कि जहांतक होसके जल्द लौटकर आवें ।

यह सुनकर गोविन्दसिंह२५ आदमियोंको नावमें बिठाकर उसपार गये इतनेहीमें वहडाकू भी खाना खा चुकेथे और वास्ते लड़नेके तै यार होरहेथे जब इन्होंने अपनी तरफ आते हुए देखातो गोलियां चलाई इधरसे भी [illegible]

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

छूटी और उस पार पहुँचकर खूब लड़ाई हुई जबतक वह नाव बाकीके आदमियोंकोभी ले पहुँचो तो दोचार डाकूतो भागगये और बाकी सब मये सरदारके मार डालेगये ।

फिर तंबूमेंसे उस औरतको निकाला और कहाकि तुमडरोमत इन डांकुओंको हमने मार डाला और यह बताओ कि तुम इनके हाथ क्यों पड़ी उस औरतने कुछ जवाब नहीं दिया तब गोविंदसिंहने इस आदमियोंकी होशिया रीमें इस औरतको छोड़ा और कहाकि तुम होशियार रहना हमअभी लौटकर आतेहैं यह कहकर गुलाबसिंह और सवारोंको लेकर उस डांकूके मकानकी तरफ चले ।

चूंकि गुलाबसिंह उसमकान का रास्ता जा नताथा इस वजहसे उनको घंटेके अंदर ले पहुँचा वहां जाकर जो कुछ सिपाही होशिया री कररहेथे उनको मारभगादिया और उसके मकानमें जाकर जो कुछ माल मताथा सबले

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

लिया लेकिन राजकुमारको नहीं पाया तब गुलाबसिंहसे कहा कि यहांपर राजकुमार तो मिलेही नहीं इतनी मिहनत व्यर्थ हुई।

गुलाब०चलो इसमकानको तो देखना चाहिये।

यह कहकर उसके भीतर गये तो किसीकी चिल्लानेकी आवाज सुनाईदी यह उस तरफ को गये तो एक औरत दो आदमियोंके साथ खड़ी है एक आदमीको जो लोहेके जंगलेमें बंदहै धमका मार रही है और कहती है कि तेरेही सबबसे मेरा यह हाल हुआहै यहदेखते ही उस तरफ दौड़े।

लेकिन जब उस औरतने इनको अपनी तरफ आते देखातो भागकर दूसरे कमरेमें मय आदमियोंके छिपगई गोबिन्दसिंहने उस कमरेको खूब देखा लेकिन उसका कुछ पता न चला फिर उस आदमीको जो जंगलेमें बंदथा निकाला परन्तु देखतेही रोनेलगे कि हायमा ई राजकुमार यह तुमारी क्या दशा होगई

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

क्योंकि उनके पीठमें एक तलवारका जख्म था आखिरको उन्हें एक घोडेपर सवार कराया और उस जंगलमें आये जहाँपर कि वह दस सवारथे अब राजकुमारने उस औरतको देखा तो कहा प्यारी कमलावतीतुम यहाँ कैसेआगई

कमला० राजकुमारको देख मनमें खुशी होकर प्यारे मैंने यह दुःख आपकी बदौलत पाये हैं लेकिन तुमको देखकर मैं सबको भूलगई मुझ को छुटेरे इसजंगलमें लेआये इतिफाकन इन आदमियोंने जोकि आपको लायेहैं उनके हाथ से बचाया ॥

राज० मैंनेतो यह समझाथा कि कलावतीको यह लिये जारहेहैं क्या तुम्ही उसवक्त रोरहीथी।

कमला० जीहां उन बातों की याद मुझको न दिलाइये मुझे फिर डर लगताहै।

गोविन्द० राजकुमार चलोभाई आपके लिये पिता बडेही रोरहेहैं उन्होंने खाना पीना सब छोड दियाहै और शीघ्र आनेको कहाहै।

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

राज० जिसके लिये बीरानहुआ वह तो मि

लीही नहीं ।

गोविंद०अच्छा एक दफे तो पितासे मिल

आओ कलावती का भी पता लगजायगा।

राज०और कल्यानसिंहको भी नहीं खबरहै

कि वह बिचारा जाने कहां होगा !

गोविंद०वह भी एक जगह कैदथा लेकिन

हमने उसको निकाला और वह आपकी त

लाशमें घूमता होगा चलो अब हरपालगढको

चलना चाहिये ?

राज०खैर तुम नहीं मानतेहो तो चलो !

यह कहकर नावके सहारे इसपार आये और

सब आदमी हरपालगढको रवाना हुए ।

सप्तम परिच्छेद

जब कृष्णा को कल्यानसिंह मोतीबाग से

कलावती व राजकुमारकी तलाशमें किसीतरफ

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

को रवाने हुए तो एक शहर में पहुँचे जिसमें क्या देखते हैं कि दुकाने खूब सजरही हैं हरएक आदमी तरह २ के रँगीन खुशनुदार कपड़े पहिने हुए हैं और जगह व जगह नाचरंग इत्यादि उत्सव होरहे हैं यह दोनों सरायमें जाकर ठहरे और भटियारेसे कहा कि आजकल क्या यहां पर कोई मेला होता है कि जिसके सबबसे शहरमें धूमधाम हो रही है।

भटि०नहीं मेलातो यहांपर कोई नहीं होता है मगर यहांके शाहजादे को एक जंगल में एक लड़की जो कि बहुत खूबसूरत है बेसधपाई है और शेरको मारकर लाया है अब आजके २५ वें दिन उसके साथ अपना विवाह करेगा इस वजहसे यह खुशी होरही है।

यह सुनकर यह चुप होगये रातके वक्त जब सब सोगयेथे तबकृष्णाने कल्यानसिंहसे कहा कि मुझे मालूम होता है किकलावती यहांपर है उसको जरूर इसजगह तलास करना चाहिये

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कल्यान०यहांपर भेष बदलनेसे काम सिद्धि होगा। आध घंटे तक ऐसीही बातें सोच बिचार कर सोगये सवेरा होतेही एक मकान किरायेको लिया और बाजारसे जरुरी सामान लेकर आये और कृष्णाको लेकर कल्यान सिंह बाजारमें चलेगये कृष्ण ने मरदाना भेष करके बिसांतीका सौदा लेकरशहरमें फेरीकरी जबयह राज महलकी तरफ गईतो एक दरबानीने इससे आकर कहाकि तुमको महलोंमें बुलायाहै कुछ सामान लेनाहै सो हमारे साथ चलो कृष्णा उस दरबानीके साथ होली वहां पहुँचकर सब सामान दिखाया रानीने चूड़ी टीका बेंदी वगैरह को चीज दरकारथी सोली और उसकी कीमत इसके हवालेकी।

जब यह वहाँसे चलीतो इस महलके सामने एक महल और बनाहुआथा उसमेंसे एक टहलनी निकली और इसको बुला लेगई कृष्णा वहां क्या देखतीहै कि एक मकान बड़ा आ

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

की साम बनाहै लेकिन उसमें आदमी का नामो निशान नहीं है यह देखकर अपने मन में कहा कि यहां कौन एकांत मे बास करता है इस जगहतो दिनमें भी डरसा मालूम होताहै

कृष्णा०(टहलनी)तुम मुझको कह लेआई हो यहां पर आदमी का नामो निशान तक नजर नहीं आताहै सौदा कौन लेगा जो तुम को कुछ सौदा लेनाहै तो यहां से लेआओ मैं आगे नहीं जाऊँगा।

टह० आप मर्दहोकर ऐसी डरपोक बातें करतेहैं बादशाही महलतो ऐसही होतेहैं और हमभी तो यहीं पर रहतेहैं !

कृष्णा० इससे क्या मतलबलो यह सब चीजें लेजाओ दिखलाओ मैं यहीं परहूं !

ऐसा कहकर अपनी अँगूठी भी उन्हीमें रखदी जबवह टहलनी सब चीजेंलेकर भीतर गई और रानीको दिखाईतो दो अँगूठी उस ने पसंदकी और टहलनीसे कहाकि उससे

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

गाको यहीं बुलाला कुछ चीज और दरकार
है टहलनीने कहा वहयहांनहीं आताहै आप
ही वहां चलकर देखलें यह सुनकररानीवहां
से टहलनीके साथ इस सौदागर [कृष्णा] के
पास आई और इसको खूब गौरसे देखनेलगी
व कृष्णाभी रानीको देखनेलगी तब रानी ने
टहलनीसे कहा कि तू बाजारजा पाननहींरहे
हैं सो लेआ यह सुनकर टहलनी वहांसे चली
गई तब रानीने इनअँगूठियोंको दिखाकर कहा
कि तुमने ये कहांसे खरीदी ।

कृष्णा०तुमयहां आकर रानी बनगईहोऔर
हम तुमारे पीछे जंगलोंमें मारे२आवाराफिरते
हैं तरह २ के सदमे उठातेहैं आप हमको क्यों
कर पहिचानोगी ।

रानी० ऐ प्यारी कृष्णाहै ऐसाकहकर उससे
जाकर लिपटगई और खूब रोई ।

कृष्णा०देखो कलावती इसवक्त रोनेकामौका
नहीं है लेकिनतुम हमको यहबताओ कि यहां

शाहजादेसे क्या तुमारी बातहुई है वह तुमारे पास कब आताहै ।

कला० उसनेतो मेरा सतीत्व नष्ट करदिया होता परन्तु मैंने अपनेको एकमहीनेके वास्ते बहाने देकर उससे बचायाहै कि अच्छी तिथि को मेरे साथ सौदा करलेना अभीसे इतनी जल्दी न करिये मैंतो अब तुम्हारी होहीचुकी और वह मेरेयहां शामके १ बजे आताहै आध घंटे १ घंटेतक मुझको समझा बुझाकर चला जाताहै ।

कृष्णा० राज दरबारमें रहता होगा !

कला० सुनाहै कि अपने दोस्तोंके साथ भंग का नशा करके कभी बगीचामें कभी नदी को सैरको जाया करताहै ॥

इतनेही में किसीने किवाड़ों को खटखटाया तब कलावतीने कहा कौनहै लेकिन कुछ जवाब न पाया इसने समझा कि हवाके झोंकेसे किवाड़ खटके होंगे और फिर बातचीत शुरू हुई

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कला० मुझको अब जल्द यहां से छुडाओ क्योंकि अब मुझसे राजकुमारकी जुदाई नहीं सही जाती है और १० दिनके अँदर मैंने छुटकारा नहीं पाया तो आत्मघात कर लूंगी।

कृष्णा० ऐसा हर्गिज नहीं करना परमेश्वर की कृपासे तुम जल्दीही मुक्ति होगी क्योंकि राजकुमारका सरदारभी मुझको मिलगया है और वह आजकल यहीं है।

कला० तुमने राजकुमारको कहां देखा है

कृष्णा० मुझको मोती बागमें राजकुमारके बदले एक लिफाफा मिलाहै वह भी तुम्हारी खोजमें कहीं फिरते होंगे ?

कला० उनकी मुहर तुझे कैसे मिली !

कृष्णा० उनके सरदारने दी है जिनको एक जँगलमें पडी हुई मिलीथी ॥

कला० यह कैसे उनसे गिरी जरूर कुछ वेहोशी होगी हे ईश्वर दीनबन्धु मैं क्या मुझे दुखही दुख नजर आताहै अब तो इस अभागिनी की

टेरै सुन और इस बिपत्तिसे मुक्तिकर!

इतना कहते२इसका जी भरआया और आँखें पानीसे तर होगई तब कृष्णाने बहुत कुछ समझाया और कहा कि इसवक्त मैं जाती हूं लेकिन तुम होशियार रहना किसी न किसी तदबीरसे तुमको निकालूंगी यह कहकर वहाँसे चली और कलावतीभी उठगई जब कृष्णा किवाड खोलकर बाहर हुईतो किसीने पीछेसे आकर एक धक्का मारा वह पछाड खाकर गिरपडी यह देखकर एक आदमी ने इसकी मुश्कें बांधली और तहखानेमें बँद करदिया।

अष्टम परिच्छेद !

गोविंद, राजकुमार, कमलावती, गुलाबसिंह मोहनसिंह आदि लियेहुए सकुशल ... पहुँचगये अपने पिता मातासे मिले इनकी माता कमलावतीको देखकर बहुत खुशीहुई सब शहरमें खुशी मनाई गई लेकिन चार दिनरह

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कर राजकुमारने गोविंद सिंहसे कहाकि कल्याण सिंह व कलावती को खोजना चाहिये ।

गोविंद० आज सबको पितासे आज्ञा लेना चाहिये कल उनकी तलाशमें चलेंगे ।

राज० अच्छा कलही चलेंगे परन्तु जहाँ तक हो सकेगा जल्दीही करनी चाहिये क्योंकि वह जाने किस आफत में फँसे होंगे ।

रातके वक्त जब राजा साहब और दोनों पुत्र राजकुमार बैठे हुएथे तब गोविन्दसिंहने कहाकि पिताजी एक लडकी जो राजा शाहपुरकी है उसको राजकुमार बहुत चाहतेहैं बिना उसके हर वक्त उदासी बनी रहती है सो आपकी आज्ञा होयतो इसकी तलाशमें जावें क्योंकि वहभी किसी जंगलमें इन्होंके लिये बीरान होरही होगी इससे हमको आज्ञा दें दीजिये तब राजाजाने कहाकि तुमतो जंगलों में घूमतेहो मेरे प्रान सोचहीमें निकला करते हैं लेकिन सौ सवार साथले जाओ और यहाँ

जल्द लौटकर आओ !

दूसरे दिन गोविन्दसिंह पिताकी आज्ञानुसार राजकुमार को और सौ सवार साथ लेकर वहांसे रवाना हुए तब गोविन्दसिंहने कहा कि किधर चलना चाहिये।

राज० पहिले मोतीबागको चलना चाहिये वहाँ से कुछ न कुछ पता जरूर लगेगा क्योंकि उस की सहेली जरूर आगई होगी।

यह सुनकर सब आदमी उसी तरफको रवाना हुए और कोई ४ घंटे चलकर मोतीबागमें पहुँचे वहाँपर सब बागको चारों तरफ देखा लेकिन कुछ पता न चला वह लिफाफा पाया जो राजकुमार रखगयेथे जब इनको वहां पर कोई नहीं मिलातो तालावपर आकर बैठगये और कुछ बातचीत करनेलगे थोड़ी देर बाद यह क्या देखतेहैं कि एक सवार भागा हुआ आ रहाहै और वहभी इसी बागमें घुस आया इन्होंने उसे देखकर छातीसे लगाया और कहा

कि कहो कल्यानसिंह क्या खैर खबरहै कुछमत लब हुआ कि नहीं।

कल्यान०[हाँपते हुए]नहीं कुछभी नहींहुआ सब काम बिगड़गया।

गोबिन्द०क्यों क्या होगया खैरतो है इतना क्यों घबड़ा रहेहो।

कल्यान० मैं जब आपका साथ छोड़ कर अकेला रहगयातो इसी घोड़ी बागका रास्ता लिया बीचमें मेरा घोड़ाभी जंगलमें चरताहुआ मिलगया उसपर सवार होकर मैं चला वहाँ पहुँच कर क्या देखताहूँ कि एक औरत बैठीहुईहै लेकिन पीछे उसके बतलानेसेहाल मालूमहुआ कि कलावतीकी सहेली है उसने एक लिफा राजकुमारका लिखाहुआ दिखाया मैंने उसको पढ़कर समझाया राजकुमार किसी जंगलमेंही मिल जायँगे यह सोचकर हम और वह और त जिसकानाम कृष्णाहै दोनों वहाँसे चले गये लेकिन यहतो बताओ कि कुँवरजी तुम्हारा कैसे

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

गिरी जो हमको एक जंगलमें मिलीथी ।

राज॰ मैं एक दफे डाकुओंके हाथपड़गयाथा। उसवक्त मुझे होश नहीं कि जाने किसजगह हीली होकरगिरगई दिखाओ वहअंगूठीकहाँहै

कल्यान॰ कृष्णाके पासहै ।

राज॰ वह कहाँ है और क्या कररही है ।

कल्यान॰ हम दोनों यहाँ से चले और एक शहरमें पहुँचे वहांपर एक भटियारेसे पूछ कर जाना कि कलावती यहीं है दूसरे दिन एक मकान किरायेपर लिया मैंतो बाजारमें गया और कृष्णाको सौदागरोंकासामान रखगयाथा। वहभी कलावतीकी फिक्रमें मरदाना लिबास पहिनकर चलीगई मुझको घूमतेहुए शामहोग ई तो एक बगीचेमें पहुँचा वहाँपर एक बुढ़िया मालिन बैठीथी मैंने उससे पूछाकि यह किस का बगीचाहै उसने कहा कि यह यहांके शाह जादेने बनवायाहै और यहींसैरको आयाकर तेहैं और उनके आनेका वक्तहो चलाहै मैंने

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

उसके हाथ जोड़कर कहा कि माता मुझे बागमें जानेदे और ले एक रुपया जा मेरे खानेको ले आ। बुढ़िया खुश होकर वहाँसे चली और मेरे खानेको लाई और मैंने एक रुपया और दिया फिर कहा कि क्यों माता आजकल यहां क्या मेलासा होताहै उसने कहा एक शाहजादीसे यहांका शाहजादा विवाह करेगा तब मैंने कहा कि मुझको उस शाहजादीका दिखादे क्योंकि एक औरत हमारे हाथसे छिनगई है इस लिये देखना चाहतेहैं कि वह कौनसी है वही है या औरहै उसने कहा मेरा काबू नहीं है क्योंकि वहां सख्त पहराहै यहसुन मैं बहुत गिड़गिड़ाया और एक अशरफी उसको देकर कहा कि अगरतू हमारा काम करदेगीतो अपने राजा से तुझको माल दिलाऊँगा सोतू उमरभर बैठी खायाकरियो बुढ़िया अशरफी देखकर खुशहुई और कहा सबरकरो शाहजादा यहां होजावेतब तुमारेसाथ मैंभी राह देखतेरहियो [illegible]

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

लेकिन शाहजादा नहीं आया तब बुढ़ियाने सदर दर्वाजेको बंदकर दिया और मुझे भीतर बागके लेगई एक पेड़के नीचे पहुँचकर खुर्पी से खोदा वहांसे एक डिब्बी निकाली उसमें एक ताली रक्खीथी वह लेकर सामनेके दाला नमें पहुँची औरएक आलमारीकी तालीलगा कर खोला उसमें नीचे उतरनेको सीढ़ियां थीं हम दोनों उसमें नीचे उतरे चलते हुए ऐसी जगह पहुँचे जहाँपरदो तरफको रास्तेथे वह मुझको सीधी लिवाले॰ई तबमैंने कहाकि यह दाईं तरफको कहांको रास्ताहै उसने कहाकि यह उस तहखानेको है कि जिसमें वहआदमी जो ज्यादा कसूर करतेहैं कैदकिये जातेहैं। थोड़ी देरमें एक दर्वाजा मिला उसी तालीसे इस दरकोभी खोला तो सामने बहुत बड़ा म कान नजर आया हम उसमें चलेगये तो क्या देखतेहैं कि एक कमरेके कोनेमें कलावती म सनदपर बैठा है लेकिन [illegible] जरहोगई
CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

है और उदासी छाई है यह देखकर चाहता
था कि कुछ कहूँ परन्तु बुढियाने मेरा हाथ
पकड़ा और धीरेसे कहनेलगा कि यहां बात
चीत न करना नहींतो हम तुम दोनों पकड़े
जायँगे और मुफ्तमें जान जायगी इसलिये
बेहतर है कि यहाँसे चलो यहकह बुढिया मुझ
को साथलिये उस दर्वाज़े होकर बाहर निक
ल लाई और कहाकि वह शाहजादी यही है
मैंने झूंठ कहा कि यह नहीं है झूँठ इस लिये
बोला कि भेद खुल न जाय यह कहकर मैं
उस बागसे रवाना हुआ और अपने मकान
पर आया लेकिन वहाँ कृष्णामी लौटकर नहीं
आईथी यह देखमें घबडाया और बाजार में
एक तँबोलीके पास बैठा इतनेहीमें एक चप
रासी पान लेने आया और कहनेलगा आज
महलोंमें एक सौदागरको हमने पकडाहै लेकि
न वह परदेशी है तब तँबोलीने कहाकि क्या
कसूर उसने किया तब वह बोला कि एक

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

टहलनी जोकि तुमसे पानलेने को आईथी। हम चार आदमियोंको बुलालेगई और कहा सुने। यह सौदागर क्या कहरहाहै जो हमने कान लगायातो तुम होशियार रहना तुमको किसी न किसी तरह निकालेंगे। यह सुना वह बाहर आयातो हमने उसे पकड़ाहै। यहकह कर चपरासी चलागया। मैंभी चलदिया परन्तु जब मकानपर पहुँचकर घोड़े पर चढ़कर मैं रवाना हुआतो १०-१२ सवार मेरे पीछे भागे और कहनेलगे ठहरजा शहजादी लेजा क्योंभागता है मैं भागता हुआ यहाँ आ पहुँचाहूँ अब मुझे यह फिकरहै कि कलावती तो मिलीनहीं कल्याणाभी फँसगई। इसलिये अब जल्दी चलकर उनको फंदसे निकालना चाहिये।

राज० बहुत अच्छा हुआ पतातो लगगया।

गोबिंद० चलो अब कूँच करदो देरी न करो।

कल्यानसिंह इन दोनों भाइयोंको व सवारोंको लेकर उसी शहरको रवाना हुए॥ गो

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

पहर चलने के बाद उसी शहर के नजदीक पहुँचे जब १ मीलका फासिला रहगया तबवहीं पर ठहर गये।

नवम परिच्छेद

शाम के वक्त गोविंदसिंह राज कुमार और बीस सवारों को साथ लेकर कल्यानसिंह उसी बागको रवानेहुए बाकीके ज्वानोंसे कहदिया कितुम यहींपर होशियार रहना जब उसबाग के दर्वाजेपर पहुंचे तो उस बुढियाने कहा कि अंदर जानेका हुक्म नहीं है लेकिन इन्होंने उसकी कुछभी नहीं सुनी और भीतर चलेगये जब उस दालानमें पहुँचे तो क्या देखतेहैं पांच आदमियों के साथ शहजादा बैठाहै वह इन को अपनी तरफ आता देख कर बोला कि साहिब आप लोगों का यहां कैसे आनाहुआ यहांके आनेका तो हुकमही नहीं क्या दरपर बुढिया नहीं है।

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri

गोविंद० यह बिचारी बुढ़िया इसको कैसे रोक सकती है मगर आपको दूसरे की स्त्री पर हाथ डालना वाजिब नहीं है लिहाजा इसी में नफा है कि उसको तुम हमारे हवाले करो

शाहजादा० इसमें हमारा कुछ कसूर नहीं है हमने तो एक शेरसे उसकी जान बचाई और जंगल में पाई है उसपर आप का कुछ अधिकार नहीं है बेहतर यही है कि अब यहां से आप अपना कूंचकर जाइये क्यों अपनी जानके दुश्मन बनते हो।

राज० हम फौरन यहांसे चले जायंगे आप उस स्त्रीको व उस सौदागर को जो आपने कैद करा है हमारे साथ कर दीजिये।

शाह० (अपने दोस्तों में से) मित्र चंदर सेन आप हमारे पितासे कहदो कि एक पल्टन जल्द तैयार कर के भेज दो जो आकर इन को कैद करे।

चंदर० बहुत अच्छा मैं जाता हूं यहां तिरु तरह

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

इतनेही में राज कुमार को गुस्सा आगया और घोड़े से कूद कर उस दालान में पहुँचे यह देखतेही गोविंद सिंह कल्यान सिंह भी उनके पीछे और उन आदमियों को पकड़ कर बादशाह जादेको पकड़कर गिरफ्तार कर लिया लेकिन जब उस बुढ़िया ने यह तमाशा देखा तो बहुत घबड़ाई और वहां से भागी ॥

तब कल्यान सिंह ने दर्वाजे को बंद करवा दिया और इन भाइयों का इन की हथेलियों पर और आप उसी पेड़ के नीचे जाकर छोड़ा और आप उसी पेड़ के नीचे जाकर जमीन खोदकर वह संदूक निकाला उसमें से ताली लेकर दालान में आये और उस आठ ताली को खोला व दोनों भाइयों हम सवारों को साथ लेकर उस गुप्त मार्ग से चले जब वह दालान आया तो पांच आदमियों को वहीं दूसरे पार्श्व के दर्वाजे पर छोड़ दिया और आप उसी महल में पहुँचे जिस कमरे में कला वती को देखगये थे वहीं इनको भी ले पहुँचे

तब राजकुमार से कहा कि अब आप अन्दर जाकर कलावती को लेआइये यहसुनकर राजकुमार खुशी से उस कमरे के भीतर चले गये लेकिन जब इनकी निगाह कलावती परपड़ी तो एकदम कलेजेमें धक्कासा लगा औरकहा प्यारी क्या दशा तुम्हारी हुई उठो अबइस गम व रंजको छोड़ो।

कलावती हे प्राणनाथ यह दशा आपकेनैन रूपी बाणोंके लगने से हुई है लेकिन आज मेरे बड़े भाग्यहैं जो आपके दर्श कहतेरकलावती रोउठी और एक क्षणके लिये उसकाकंठ रुकगया बोलनेकी ताव नरही तब राजकुमार ने कहा किहे मृगनैनी मैंने तुझे बनर में ढूँढा बहुत हैरान हुआ।

लावनी राजकुमारकी।

मैं खुशी हुआ जब देखी आप की सूरत।
मेरी बनी यही आप की मूरत॥ मेरी

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

जान बनी अब वही निराली है। मुंह सूख गया और चली गई गालों की लाली है॥ मैं तुमरे पीछे बन२में टकराया। पर तेरा वहां पर नामों निशां न पाया। मेरी जान भटकता मैं बनमें डोलूं। जब आये याद तेरी बैठ जगह एक रोलूं। ईश्वरने आशा मेरी पूरन कीनी। मेरी जो सूरत तेरी मुझको दिखला दीनी। मेरी जान चलो उठ छोड रंज गमको। और भाई ठाडे द्वार देर यहां होती है हमको॥

यह सुनकर कलावती अपने दिलमें ईश्वर को मनाती हुई उस राजकुमार के साथ कमरे से बाहर निकली और सब वहांसे चल दिये तब रास्तेमें कलावती ने राजकुमार से कृष्णा के छुडाने को कहा उन्होंने कहा वहभी अभी छुटती है उसकी कुछ फिकर न करो जबदस दोराहे पर आये तब कल्यान सिंहने कहाकि यहां का कैदखाना यही है कृष्णा को यहीं पर देखना चाहिये तब गोविंद सिंह ने कहा

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

कि अच्छा तुम इन आदमियों को साथ ले जाओ और कृष्णा का पता लगा लाओ तब तक हम यहीं हैं।

यह सुनकर कल्यान सिंह उन सवारों को साथ लेकर उस दूसरे रास्ते को गये और सब जगह ढूँढ़ा लेकिन कहीं भी आदमी का पता न लगा इतनेहीमें एक सवार बोल उठा और कहाकि भाई कल्यानसिंह जराइधर इसझाड़ी में से सुनों तो सही यह कौन आदमी बोल रहा है। कल्यानसिंह ने सुना लेकिन सिवाय गुनगुनाहट के कुछ बात समझ में नहीं आई और उधर की जमीन भी बहुत नीची नजर आई तब यह सोचकर कि कुछ पता लगाही जायगा नीचे जानेका रास्ता ढूँढ़नेलगे एका एक इनका पांव ऐसी जमीन पर पड़ा कि वह उसमें घुसगया यह देख कर सँभल गये और उस जगह को उन जवानों से खुदवाया तो एक दर्वाजा निकला उसको खोलातो सीढ़ियां

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

नीचे को दीवीं यहसब उसमें नींचे उतर गये वहांजाकर क्या देखते हैं कि एक कठेरे में एक आदमी बंदहै और बाहर उसके दोजवान संगीन लिये हुए पहरा दे रहे हैं वह इन को अपनी तरफ आता देख कर मारने को दोड़े परन्तु इन्होंने उनको बातकी बातमें मारडाला और उस कैदीको निकाला (यह कैदी वही कृष्णाहै जो इसवक्त सौदागर के भेषमें है) और उससे राजकुमार के आने कलावती के छुडाने का सबहाल कहा सुनकर बहुतखुश हुई और कहा प्यारे अब हमारा सितारा भी बुलन्द हुआ चाहताहै चलो अब इसभयानक जगह से जल्दी निकल चलो यह सुन कर कल्यान कृष्णा को साथलेकर उन जवानों के साथ उसी दरवाजे से निकल कर चल दिये।

जब कलावती राजकुमारके पास पहुँचीसब आदमी खुशी हुए और वहांसे उसी दालानमें चलदिये जहांवह बगीचाथा थोड़ीदेरमें बगीचे

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

में पहुँचगये आदमारी को बंद करदिया और वहांसे चलने की तैयारी की इतने में बाग के चारों तरफ बडा शोरगुल मचा पकडलो मार दो जाने न पावे इत्यादि।

प्यारे पाठको यह शोर सब उस बुढिया मालिन का किया हुआहै जबइसने शाहज.दे को गिरफ्तार देखातो घबडाती हुई राजा के पास पहुँची और सब हाल कह दिया यहसुन कर राजा बहुत गुस्सा हुआ और करीब २५० ज्वानोंको हुक्म दिया कि जाओ उस बागको चारों तरफ घेरलो कोई उसमें से निकलने न पावे मैंभी पीछे से आताहूं। वही सवार बाग के चारोंतरफ शोर करकरेथे इन्होंनेजबदर्वाजा खोलकर निकलना चाहा कि आदमियों नेआ घेरा और लडाई शुरू होगई।

गोविंदसिंह के सिपाहियों ने जोकि हेरोंपर रहगये थे बंदूकों की आवाज सुनी तो एक दम वहां से ... और पीछे से आकर इन्हे

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

सिपाहियों को बाग के चारों तरफसे घेर कर मारने लगे उधर राजकुमारने भी ऐसी बहादुरी दिखाई कि जितने आदमी दरवाजे पर थे सब को मार भगाया।

बागमें बिचारी कलावती ईश्वर से मनारही थी कि हे परमेश्वर अभी हमारी विपत्ति पूरी नहीं हुई जो दुःखही दुःख नजर आताहै हे ईश्वर यह क्या गजब होताहै चारों तरफ खून ही खून नजर आताहै हेदीनबंधु पापितपावन गरीब निवाज अबतो हमारे ऊपर कृपा करो इस दुःख रुपी समुद्र से दयारूपी नावमें बैठा कर पार लगाओ।

इतनेही में राजा भी हाथी पर सवार होकर आपहुँचे इधरसे गोविंद सिंह कल्यान सिंह ने सामना कीना और कृष्णाभी जो मरदाने भेष में थी एक सिपाही की तलवार छीनकर दंगल में पहुँच गई और बहादुरी दिखाई।

आध घंटेकी लड़ाई बाद राजा को गोविंद

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

सिंह ने हाथीसे गिरादिया और मुश्कें बांधकर बाग में लेगये जब फौजने राजाको कैद होते देखा तो सब ज्वान भाग गये।

यह राजाको लेकर उसी शाहजादे के पास लेगये और सिपाहियों को लूट करने का हुकम दिया। यह सुन कर राजा बहुत घबराया और कहा कि हे राजपुत्रों? ऐसा न करो शहर तबाह हो जायगा। अब जो हमको आप हुक्म दें सो हम करने को तैयार हैं तब राजकुमार ने कहा कि या तो तुम अपनी लड़की को साथ हमारे गोविन्दसिंह को ब्याह दो नहीं जो मारिके में आवेगा सो हम करेंगे।

तब राजा ने कहा मुझे तो कहीं भी शादी करनी। जो आप कहोगे वही मैं करने को हाजिर हूं यह सुन कर राजकुमार ने तीन बार कौल कराकर राजा व शाहजादेको छोड़ दिया। और इन्होंने भी अच्छी साइत में अपनी लड़की मायादेवी की शादी बड़ी धूमधाम से गोविन्द

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

सिंहके साथकरदी और बहुतसीपल्टन वहान दहेज दिया। इन्होंने शुभ अवसर खूब खुशीके साथ वहांसे कूच कर दिया और हरपाल गढ की राहली। तीन पहर चलनेके बाद यह सब आपहुंचा बाजे गाजे के साथ हरपाल के करीब पहुँच तब इनके पिताने सुना कि हमारे पुत्र बिनय करने आरहे हैं तो गोलंदाजोंको सलामी की तोपें छोड़ने का हुकम दिया और आप की नी कोर दरवाजे पर आय और उनको अगवनी को दरवाजे पर आय और उनको महलों में लेगये इनकी माता बहुओं को देख कर बहुत खुश हुई किसी ने सच कहाहै कि बारह वर्ष पीछे सब के भले दिन आते हैं सो आज इनकी भी मुराद पूरी हुई।

हरपाल गढमें आज दिन जिधर देखो उधर ही खुशी मनाई जारही है हरएक बाजार हाट में नये तरहके नाचमुजरे रामभजन इत्यादि जलसे होरहे हैं हरएक आदमी अपने मनमें खुशी होरहे हैं। पंडितों को बुलवाकर विजय

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

दत्त सिंहने शुभ घडीमें राजकुमार का विवाह कमलावती व कलावती के साथ कर दिया और इनको रहनेको अलाहिदा महल बनवा दिये और खुशी से ये तीनों साहब ऐश आराम उठाने लगे ।

एक दिन कमलावती कलावती कृष्णा सखी एक साथ बैठी हुई थीं तब कृष्णाने कलावती से कहा कि परमेश्वर ने आपकी मुराद पूरी की लेकिन आपने इस लौंडी का कुछ भी ख्याल नहीं किया ।

कला० तो तू बता कि क्या चाहती है ।

कृष्णा० मेरा मन सरदार कल्यान सिंह ने चुरायाहै मैं उन्हीं को चाहती हूं ।

इतने ही में राज कुमार आन पहुंचे तब कलावती ने एकांत में जाकर उनसे कृष्णा का हाल कहा उन्होंने कहा कि कल्यानसिंह भी ऐसा ही चाहते हैं अब इस काम में देरी नहीं करनी चाहिये ऐसा कह वहां से उठ

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

और पिता की आज्ञानुसार कल्यानसिंह को बुलवाया और कृष्णा के साथ इन का भी विवाह कर दिया यह भी ऐस आराम से रहने लगे कल्यान सिंह को अपना दीवान बनाया।

और कमलावती व कलावती भी आपस में बड़ी ही हिल मिल कर रहने लगीं जन्म भर उन्होंने ऐसी ही प्रीत भाव से गुजारा जैसे यह सब अपनी २ मुराद को पहुँचे ऐसे ही परमेश्वर सबकी आशा पूरन करे!

अब इनके लड़कों का तिलिस्म में फंसना व उसको तोड़ना व मगधके राजा की लड़की से विवाह करना इस किताब के दूसरे भाग में लिखेंगे।

प्रिय पाठक महाशय इस उपन्यास में जो कुछ भूल चूक शुद्ध असुद्ध को त्रुटि हो क्षमा प्रदान करें और इस को अवलोकन करके मेरे उत्साह को बढावें।

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

॥ दोहा ॥

श्री सम्वत उन्नीस छयासट के दरम्यान ।
श्रावण कृष्णा द्वादसी बुद्धवार शुभध्यान ॥
गुरुपद पंकज की कृपा हेगई मोपर आज ।
उपन्यास पूरन भयो भये जमुना के काज ॥

* इतिश्री *

राजकुमार कलावती

प्रथम भाग

॥ सम्पूर्णम ॥

पता लाला बंशीधर हृदानी बुकसेलर
बंबई मैशीन प्रेस सेवका बाजार आगरा

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

* सूचीपत्र *

सत्यनारायण भाषा टीका	=)
शिव महिम्न	)॥
गंगा लहरी	)॥
बाल शिक्षा	)।
झाड़ा चक्र भाषा टीका	)॥
लग्न बाराही भाषा टीका	)।
सूर्य पुराण	)।
ज्ञान चालीसा	)।
ईश्वर विचार	)।
सन्ध्या भाषा टीका	)॥
सन्ध्या मूल	)।
हनुमान चालीसा	)।
जानकी मंगल	)।
बजरंग बाण	)।
स्वप्न विचार	)।
पत्र मालिका	)।

पुस्तकें मिलने का पता:—

लाला वंशीधर हूलासी बम्बई मेशीन

प्रेस सेवका बाजार आगरा

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

॥ सूचीपत्र ॥

गोपीचन्द	—	किस्सा सारंगा	—)
प्रहलाद चरित्र	—)॥	सुन्दर काण्ड	—)
सांगीत प्रहलाद	—)॥	किष्किन्धा काण्ड	)॥
नौटंकी	—)	मोरध्वज की कथा	)॥
पूरनमल	—)	सनातन धर्म भजनमाला की पहिला भाग	)॥
नटके चौबोले	)॥।	तथा दूसरा भाग	)॥
रूप बसन्त	—)	भजन प्रभाती	—)
सरवर नीर	—)॥	तोता कहानी ४ भाग	।)
हरिश्चन्द्र	—)	जोबन नौ बहार	)॥
मोरध्वज	—)	अक्षर दीपिका	)॥
भजन रामायण	—)		

पता पुस्तके मिलने का:—
लाला—बन्शीधर हलवानी बुकसेलर
बम्बई मेशीन प्रेस सेवका बाजार आगरा

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

विज्ञप्ति।

आज कल धोके बाजी और चालाकी का जमाना बडी तेज रफ्तारसे बाकअ है इसलिये आपको इत्तिला दी जाती है कि इस पुस्तक के किसी भागको अदल बदल करें या इस के मतलब को घटा बढा कर छापने का इरादा कभी न करें। ऐसा करने से फायदे के बदले नुकसान उठाना ज्यादा मुमकिन है। इस पुस्तक को मैंने बनाकर इसके छापने आदि का सम्पूर्ण अधिकार ला. बंशीधरजी मालिक मतबे बम्बई मेशीन यन्त्रालय को दे दिया है इसलिये उनसे बिना पूँछे कोई साहब छापने का इरादा न करें।

जमुनादास माथुर वैश्य

ग्रन्थकार.

पता—पुस्तक मिलने का

लाला बंशीधर लूदानी बुकसेलर

बम्बई मेशीन प्रेस [illegible] बाजार आगरा.

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri